नारी एक : रूप अनेक

स्वर्ण सूदन

ज्ञान प्रकाशन मंदिर
बीकानेर

प्रकाशक ज्ञान प्रकाशन मंदिर
गौरी निवास 2 ब 5 पवनपुरी
बीकानेर दूरभाष 5955

मूल्य पच्चीस रु मात्र

मुद्रक जनसेवी प्रिण्टर्स, बीकानेर

अनुक्रम

'इन्दिरा गांधी का व्यक्तित्व इतना व्यापक सहनशील एव संघर्षशील था उसको शब्दों की सीमा में बाधना असम्भव है। इसीलिए विभिन्न लेखकों एव विचारकों ने अलग अलग रूपों में चित्रित किया है। अधिक विचारकों ने उनके व्यक्तिगत गुणों को ही सराहा है जिसका अर्थ निकलता है कि वह राजनीति जिसमें कूटनीति को भी समाहित करना होता है उनके लिए गौरव थी।

— स्वर्ण सूदन

परिचय

31 अक्तूबर, 1984 की दोपहर। समय जैसे ठहर सा गया हो। इतना वज्रपात। विश्वासघात का इतना घृणित व घिनौना रूप। स्वयं अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा। पूर्ण राजकीय सूचना के अभाव में अटकलें लगाती टोलियां। देहली के आयुर्विज्ञान संस्थान के बाहर भीड़ का सैलाब। भारत जैसे देश में जहाँ पराई नारी को छूना भी पाप समझा जाता रहा है, चरित्र-हीनता की श्रेणी में आता है, वहीं पर सुन्दर यद्यपि आयु के साथ कृश होती नारी देह को उसको जो कि न केवल देश की लम्बे समय से प्रधानमंत्री ही रही वरन् जनता के जनमानस में बसने वाली, को गोलियां से छलनी-छलनी करके पृथ्वी पर गिरा देना और उनके द्वारा जिनके ऊपर उनकी रक्षा का उत्तरदायित्व था, भारतीय इतिहास की अनहोनी घटना है। रक्षक ही भक्षक बन गया और उनके स्वयं के ही निवास-स्थान पर, जबकि पूर्णतया असावधान थीं, उनकी हत्या कर दी गई। पारस्परिक विश्वास व निभरता की मानो मृत्यु हो गई हो।

वहीं साथ हृदय में पीड़ा लिए हुए उस नारी देह के दर्शनार्थ नारे लगाते हुए असंख्य नर-नारी व बच्चे। मृत्यु जैसी स्तब्धता, पूरे देश की सड़कें सुनसान। सभी उत्सुक अपनी दिवंगत नेता के दर्शनार्थ-टी वी से प्रसारण प्रारम्भ हुआ और सम्पूर्ण देश के लोगों ने प्रयास किया कि

यही न यही स टो यी द्वारा उनके दशा प्रौस कर लिए जाए। "माँ ए T ५ट भी नहीं मरी है, सम्पूर्ण देशवासियों की मरी है" ऐसा अनुभव, ऐसी चुभन। सम्भवत इस देश के जनवासियों म ऐसी मिलती-जुलती प्रतिक्रिया पहली बार ही हुई हो। 36 वर्ष पूर्व भी हिंसा के अन्धकार ने इसी तरह बुझा दिया था सत्य, अहिंसा और प्रकाश का वह आकाश दीप। सबको स्मरण आ रहा है 30 जनवरी 1948 का वह दिन, जिस दिन इसी प्रकार ही एक वृद्ध देह को छलनी कर दिया था गोलियों से। महात्मा गांधी को, जिसने की भारत के लिए स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व कर असम्भव को सम्भव कर दिखाया था मृत्यु शय्या पर सुला दिया था। किन्तु आज की स्थिति व उस समय की परिस्थिति मे कुछ अन्तर है। आज कुछ उभरते हुए प्रश्न चिह्न सबके सम्मुख उपस्थित हो गए हैं। रक्षक ही जब भक्षक बन जाए तो प्रमुख हस्तियों की रक्षा का भार कौन वहनकरें? क्या विश्वासघात का इससे भी बढकर और कोई उदाहरण हो सकता है? इसके अतिरिक्त असंख्य प्रश्न जनमानस पर उभर कर आ रहे हैं। यदि इतने बड़े देश की प्रधानमन्त्री की ही सुरक्षा सम्भव नहीं तो एक साधारण नारी की रक्षा असामाजिक तत्वों से कैसे हो सकती है? क्या इतनी प्रगति करने के पश्चात् भी हम हिंसा से अपनी रक्षा का कोई उपाय नहीं कर सकते? क्या सर्वसम्मति से उठाया गया कदम एक व्यक्ति के लिए जानलेवा हो सकता है? क्या हिंसा व आतंकवाद का आश्रित कोई भी समाज मनचाही मांगें रखकर देश की सत्ता संभाले व्यक्तियों को क्षण भर मे ही मौत के घाट उतार सकता है? इन सब का परिणाम क्या देश की अखण्डता को खतरा नहीं उत्पन्न कर देता?

नवस्वतन्त्र और विकासशील देशों मे केवल भारत ही ऐसा देश है जिसने राजनीति से हिंसा को दूर करके लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था को सुरक्षित रखा है। सत्ता परिवर्तन भी हुए लेकिन मतदाताओं के फैसले से व शान्तिपूर्ण ढंग से। लेकिन तीन-चार वर्षों से देश की राजनीति म तनाव और हिंसा का जो विष व्याप्त हो गया। उसने एक

साथ कई प्रश्न उत्पन्न कर दिए। क्या इन्दिरा गांधी की हत्या एक व्यक्ति की, किसी देश के नेता की या किसी प्रधानमंत्री की हत्या मात्र न रह कर हमारे आदर्शों की हत्या है? उन सपनों की हत्या है जो अब तक देखते रहे हैं? और इसके साथ ही एक और प्रश्न उभर कर आता है—जब इतनी सुरक्षा व्यवस्था होते हुए भी अपनी प्रधानमंत्री की रक्षा कुछ चुने हुए तथा-कथित उग्रवादियों से नहीं कर सके तो हमारे सम्पूर्ण देश की सुरक्षा का क्या होगा? विशेषकर उस समय जब कुछ शक्तियां गिद्ध आंखों से हमारे देश की सम्भावनाओं पर दृष्टि रखे हैं।

एक प्रश्न चिह्न हमारे सामने और वह खड़ा है और लोकतन्त्र के लिए है। कोई दल यदि सत्ता के लिए देश की अखण्डता से खिलवाड़ करने लगे तो, वह लोकतन्त्र में असह्य है। जो कुछ पंजाब में हिंसा और आतंक को दबाने के लिए किया गया उसमें सम्पूर्ण राष्ट्र की सहमति थी फिर इन्दिरा जी का जीवन लेने के लिए इतना बड़ा विश्वास घात करना। क्या लोकतन्त्र के सामने एक भयावह प्रश्न चिह्न बनकर नहीं खड़ा है?

आज हमारे बीच कितने ही व्यक्ति हैं जो सर्वस्व अर्पण कर देते उस पुनीत जीवन के लिए जिसे अपने अंक में भरकर मरण भी धन्य हो उठा। पुरानी विरासत से आधुनिक विकास तक जो कुछ भी है, सबका सार्थक प्रतीक बन गई थी 'इन्दिरा गांधी' श्रीमती इन्दिरा गांधी कितनी विलक्षण प्रतिभा की धनी थी। यह आज, उनके विरोधी, विपक्षी दलों के नेता विदेशी व अन्य सभी एकमत से जानते हैं। 'मेरी स्टोन' के शब्दों में 'उनमें किसी भी कार्य को सभालने की क्षमता है। वह एक अत्यन्त विलक्षण तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली महिला है।" यह प्रतिभा केवल उनको विरासत से ही नहीं मिली थी अपितु उन्होंने स्वयं भी प्रयत्नशील होकर उसे विकसित किया था। श्री लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के पश्चात् धुरन्धर राजनीतिज्ञों ने यही सोचा था कि उनके हाथों की कठपुतली बनकर रह जायेगी। किन्तु उन्होंने कुछ ही समय में यह सिद्ध कर दिखा दिया कि वह कठपुतली स्वयं नहीं बनगी वरन् दूसरों को बना

देगी । 16 वर्षों म उन्हा। ससार तामा को अपनी अगुलियो पर नचा लिया जो कि उनके असाधारण व्यक्तित्व का द्योतक है ?

समूची मानवता का जन कांप उठा है, इस अनहोनी से । सारे भूमण्डल के दलित पीड़ित, शोषित, सन्त्रस्त की आशाओं व आकांक्षाओं का उन्हा दीप उज्ज्वल बुझ गया । इस युग की सबसे उज्ज्वल दीपशिखा अनन्त ज्योति म लीन हो गई ?

परिहास म एक बार इन्दिरा गांधी ने किसी से कहा था विदेशी पत्रकारों के अनुसार वे पोप के बाद दुनिया की सबसे चर्चित और परिचित व्यक्तित्व है । इस अति चर्चा के परिणामस्वरूप कभी उन्हें 'सिंहवाहिनी दुर्गा' की सज्ञा दी गई तो कभी "ईव्योंलू काली" की, कभी उन्हें विश्व की महानतम महिला, राजनीतिज्ञ बताया गया तो कभी एक अहवादी तानाशाह । पर सच्चाई नामक इन दोनों ध्रुवों के बीच कहीं थी । 'श्रीमती टालर' ने एक बार नेहरु जी को लिखा था । ' बाहरी और भीतरी दृष्टि से इन्दिरा न केवल अत्यन्त सुन्दर है अपितु इतनी पावन है कि वह मुझे एक सुन्दर एव सुगन्धपूर्ण पुष्प की भाँति कोमल, अत्यन्त रूचिकर तथा हृदय को छू देने वाली लगती है। श्रीमती गांधी का व्यक्तित्व इतना विशाल, इतना बहुमुखी एव वर्चस्वितापूर्ण था कि उसे एक दृष्टि से सीमित कर किसी परिभाषा मे बाधने का प्रयत्न सदा अपूर्ण व असफल रहेगा । प्रधानमत्री बनने से पहले से ही इन्दिरा जी भारतीय राजनैतिक आकाश म एक तेजोमय नक्षत्र की तरह चमकती रही किन्तु प्रधानमत्री बनने के बाद उन्होने जिस साहस एव दृढ़ता से कांग्रेस को पुनर्जीवित किया, राजनैतिक दाँव-पेच म जिस सूझ बूझ से सफल पासे फेंके और दिग्गजों को पराजित किया तथा विश्वमच पर जो अविस्मरणीय भूमिका निभाई उसे देखते हुए ससार के मजे हुए राजनीतिज्ञ एव कूटनायक इस महिमामयी भारतीय नारी क आगे श्रद्धा से झुक जाते थे । वस्तुत श्रीमती गाधी राष्ट्र की सजग प्रहरी थी शक्ति से भरपूर, साहस से भरपूर और निर्भीक ।

इन्दिरा गांधी का व्यक्तित्व इतना व्यापक संवेदनशील एव संघर्षशील था उसको शब्दो की सीमा मे बांधना असम्भव है। इसीलिए विभिन्न लेखको एव विचारको ने अलग अलग रूपो मे चित्रित किया है। अधिक विचार का उनके न व्यक्तिगत गुणा को ही सराहा है जिसका अर्थ निकलता है कि वह राजनीति जिसमे कूटनीति को भी समाहित करना होता है, उनके लिए गौरव थी। उनके लिए मानवीय क्षेत्र मे चमकते हुए गुणा को जीवन मे ढालना प्रमुख था।

इन्दिरा जी ने संघर्षों के वातावरण मे आंखें खोली और संघर्ष की ही घूटी पीकर वह एक संघर्षशील महिला बनी और संघर्ष पसंद करती थी इसका प्रमाण इस रूप मे मिलता है कि एक बार पत्रकार सम्मेलन मे उन्होने कहा था "मैं आपके लिए और देशवासियों के लिए सहज, सुखमय जीवन की कामना नहीं करती। मैं चाहती हू कि नई चुनौतियां आयें और आपको उनपर विजय करने की शक्ति हासिल हो।"

अपनी कार्यप्रणाली के सम्बन्ध मे प्रबुद्ध महिलाओं की हिन्दी पत्रिका 'वामा' के लिए दिए गए साक्षात्कार मे उन्होने कहा था। जब हम काम करते हैं तो अपने को स्त्री या पुरुष समझकर नहीं, एक काम है जिसे ठीक से किया जाना चाहिए, उसे हम ठीक से करना होता है। उनसे पहली बार मिलने पर लगभग हर व्यक्ति की यही प्रतिक्रिया होती थी कि इतनी शक्तिशाली व सत्तावान कही जाने वाली इस महिला का व्यक्तित्व कितना नारीत्वपूर्ण व कोमल हैं।

एक शताब्दी 68 साल तक पहुचत पहुचते असमय खत्म हो गई। श्रीमती इंदिरा गांधी का पार्थिव शरीर सदा के लिए पंचतत्त्व मे लीन हो गया। उन्हे एक कविता की दो पंक्तियां बहुत प्रिय थीं—

'अपनी पंखुडियां के खोल मे बन्द कर लो, गुलाब उखड़ने है।
मेरी सांसें खिला सकती है पूरा बगीचा
मेरी हथेलियां मे सोया है एक समूचा जंगल"

वही सास सदा के लिए टूट गई वे हथेलिया निर्जीव हो गई एक महाकाव्य अधूरा रह गया । उनकी शव यात्रा का आखों देखा हाल सुनाने वाला उद्घोषक बोल उठा सुकरात को विष दिया गया, ईसा की हथेलियो मे कील टाकी गई, गाधी को गोली मारी गई और इन्दिरा जी की नारी देह को छलनी छलनी कर दिया गया । 'इतिहास म लिखा जायेगा ' कि जनसेवा मे डूबी, जगमग करती हुई एक नारी को उसके कर्त्तव्यपथ से रोक दिया गया ।" इस बदकिस्मत 84 मे भी ऐसा हुआ था, 18 म भी हुआ और 84 मे भी । '31 अक्टूबर, 1984 की सुबह विश्व की वह महान् नेता उठ गई । जिसे सारे ससार की साधारण और सताई हुई मानवीयता का शक्ति केन्द्र प्रेरणा स्त्रोत माना जाता था ।" फिलिस्तीनी नेता अराफात का यह अन्तिम सलाम सारी तीसरी दुनिया का समवेत गोकाकुल सलाम था । प्रख्यात सगीतज्ञ जुबीन मेहता ने कहा, जो हमारे हिन्दुस्तान के दिल मे गोली मारना चाहते थ उन्होने इस बार बिल्कुल सही निशाना चुना है हम सबके दिलो म गोली लगी है । ' इसमे कोई सन्देह नही कि एक तेज पुज जो एक नारी के रूप म भारत मे अवतरित हुआ और जिसका प्रकाश सम्पूर्ण लोक मे व्याप्त हो गया था हमारे ही दुष्कमो के प्रभाव से सदा के लिए शून्य म विलीन हो गया है । ऐसा तेजस्वी समय एव साहसी तजपुज क्या पृथ्वी पर बार-बार अवतरित होता है । हम भारतवासियो को भाग्यवश हर मुश्किल आसान करने वाली जो विलक्षण नेता मिली थी वही विलक्षण शक्ति हमारे देशवासियो की गोलियो की हृदयहीन बौछार से निष्प्राण हो गई ?

' इन्दिरा गाधी भारत की सबसे विवादास्पद और शक्तिशाली प्रधानमत्री ही नही थी, एक युग का प्रारम्भ और अन्त भी थी" पिछले दो हजार वर्षो की गुलामी और पराजय को यदि किसी ने मोड दिया तो वह इन्दिराजी ने । हर बार आक्रमणकारी आते हमे पराजित व पददलित कर चले जाते । पराजय टूटन बिखराव जस हमारी *नियति बन गई थी ।* पहली बार उन्होने हम बताया था निस्वार्थ विजय का उल्लास क्या होता

है ? एक पिछड़े हुए लेकिन स्वतंत्र देश का स्वाभिमान क्या होता है ? जो सातवें बेड़े की धमकी के बावजूद निडर अपनी विजय यात्रा पूरी कर लेता है और वह विजय यात्रा भी ऐसी जिसमे किसी देश को विजयी करने की या अधिकार करने की दुरभासंधि नहीं, किसी को अपमानितकरण की लालसा नहीं, अपितु न्याय का पक्ष लेकर लड़ने की निष्ठा और विजयी होने का विश्वास क्षण क्षण धमयुग है ।

वस्तुतः इंदिरा जी का व्यक्तित्व-अनेक मानवीय गुणों का एक सम्मिलित आगार था राष्ट्र को ऐसे व्यक्तित्व का नेता कभी-कभी सौभाग्य से मिलता है ।



संक्षिप्त जीवन-वृत्त

19 नवम्बर 1971, तीर्थराज प्रयाग के सगम के किनारे श्री मोतीलाल नेहरू के स्वराज्य भवन के आगन मे खिल उठा था वह लाल गुलाब जिसकी सुरभि कुछ ही समय म ससार मे फल गई। 1917 म एक बधाई पत्र म भारत कोकिला 'श्रीमती सरोजनी नायडू ने लिखा था। "सबको स्नेह एव भारत की नई आत्मा का प्यार।' स्वराज्य भवन ने, जो कि स्वत त्रता सग्राम का मुख्यालय भी था, अपनी गतिविधियो से और यह कहावत परिहाय होती है कि पूत के पाव पालने म ही दिखाई देती है। जब वह आठ साल की थी एक दिन नाम का देखा कि वह घर की रेलिंग पकड खडी थी। एक हाथ से मजबूती से उसने खम्भा पकड रखा था, दूसरा ऊचा उठाया था। मैंने पूछा "बोलो तो सही, तुम कर क्या कर रही हो" इस पर अपने न ह काले बालो से घिरे चेहरे से मुझे गौर से देखते हुए कहा "जाव-आफ-आक बनने की प्रेक्टिस कर रही हो' मैं अभी अभी उसके बार मे पढ रही थी। एक दिन मैं भी इस देश के लोगो, अपने देश के लोगो को साथ लेकर चलूंगी जिस तरह जाव आफ आक आग बढी थी। उनके बालमन मे युग चेतना व देशभक्ति के रग भरे। उनकी बुआ कृष्णा हठीसिंह ने अपनी पुस्तक "हम नेहरु" म एक प्रसग का उल्लेख किया है जो उनकी आकांक्षाओ का प्रतीक है।

नौ वर्ष की आयु में इन्दिराजी स्विट्जरलैंड में बेक्स स्थित लाईडी हेमरीकन के विद्यालय में पढ़ने भेजी गई। ऐसा लगता है महात्वाकांक्षा और जीवन के लक्षण उनमें बचपन में ही प्रकट होने लगे थे। इसका प्रमाण श्री जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक 'ग्लिम्पसिस ग्राफ वर्ल्ड हिस्ट्री (Glimpses of world History) में मिलता है जो उन्होंने नैनी जेल से 1930 में इन्दिरा प्रियदर्शिनी के नाम लिखी थी।" तथा तुम्हें याद है कि तुमने पहले-पहले 'जोन ऑफ आर्क' की कहानी पढ़ी थी तो तुम कितनी मुग्ध हो गई थी और तुम्हारे दिल में कितना हौसला था। कि तुम भी उसी तरह कुछ काम करो। साधारण मर्दों औरतों में आम तौर पर साहस की ऐसी भावना नहीं होती है। महान् नेताओं में कुछ ऐसी बातें होती है जो सारी जाति के लोगों में नाम पैदा कर देती है।" नौ वर्ष की आयु वाली इन्दिरा के विषय में स्वीटजरलैण्ड के बेक्स स्थित स्थित स्कूल के प्रिंसिपल श्री हेमरीकन (जिनके स्वयं के नाम से ही यह विद्यालय चल रहा है) ने लिखा है। "भारत की एक नन्ही सी लड़की इन्दिरा हमारे स्कूल में आई है। एक अभागे देश की सौगात के रूप में उसका बड़ी गर्मजोशी से स्वागत हुआ। वह देश स्वतन्त्र नहीं था और शीघ्र ही हम उसे स्वतन्त्र कराने की इन्दिरा की प्रखर कामना में सहगामी हो गए।' हेमरीकन की यह प्रतिक्रिया सूचित करती है कि बालिका इन्दु के मन में प्रारम्भ से ही वह अटूट देश प्रेम भरा था और विरासत में ही मिली थी, देश को स्वतन्त्र और उन्नतिशील देखने की कामना। उनकी विलक्षण प्रतिभा और व्यक्तित्व की छाप हेमरीकन द्वारा उनके चित्रण में मिलती है। वह लिखते है "इतनी छोटी उम्र में ही अपने पर नियन्त्रण रखना और परिस्थितियों का चकित हुए बिना सामना करना उन्होंने सीख लिया था। वह अपनी मोहक मुस्कान के साथ हर एक का स्वागत करती। सहपाठिनियों में वह लोक प्रिय थी अध्यापका था उस पर गहरा स्नेह था।" उस समय भी देश को स्वतन्त्र कराने की उनकी उत्कट इच्छा थी। उनके माता-पिता, उनका पूरा परिवार इस पक्ष में लगा था और स्वाधीनता के लिए किसी भी बलिदान को बड़ा नहीं मान रहा था।

उस समय का राजनैतिक वातावरण वह स्वीटजरलैण्ड जाकर भी नहीं भूल पाई। विदेश में भी 'वह प्राय गांधी का नाम लेती। हम उनके बारे में सब कुछ जानना चाहते थे। क्योंकि हमने वह तस्वीर देखी थी जिसमें वह गांधी जी के साथ खड़ी हैं। उन्होंने हमें बताया कि गांधी ने जान की जोखिम उठाकर उपवास किया और सिद्ध किया कि अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति नफरत और ईर्ष्या से किस तरह ज्यादा होती है।"

बापू के लिए जिज्ञासा उत्पन्न कराने का उनका उद्देश्य पूरा हुआ और हमरीचन लिखते हैं हम उनके बारे में जानना चाहते थे और वह दिन भी आ गया। इन्दिरा अपने देश लौट रही थी और हम उन्हें छोटे-छोटे उपहार भेजना चाहते थे गांधीजी भी भारत लौट रहे थे। वेल्स के स्टेशन पर उनकी गाड़ी थोड़ी देर के लिए ठहरी तो हमें अभिवादन का अवसर मिला। सब बच्चों के हाथों में इंदिरा के लिए छोटे-छोटे पार्सल देखकर वे मुस्कराए। इंदिरा नेहरू ने गांधी जी और समूची दुनिया के बीच एक कड़ी का काम किया है जो हमेशा कायम रहेगा।"

सन् 1927 के अन्त में इन्दिरा जी स्वीटजरलैण्ड से भारत लौटी और अगली गर्मियों में उनके पिता ने उन्हें पत्र लिखने प्रारम्भ किए जो पिता के पत्र पुत्री के नाम शीर्षक से पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुए। इन्दिराजी की नियमित शिक्षा गांधी जी की सलाह पर पूना के Pupils Own School में हुई जहां से उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। 1927-29 दो वर्ष सघन राजनैतिक गतिविधियों और युग निर्माण घटनाक्रम के थे। इस बीच पं० जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस अध्यक्ष बने। लाहौर अधिवेशन में उनके नेतृत्व में स्वतन्त्रता का संकल्प लिया गया। 1930 के 14 नवम्बर को जवाहर जयन्ती समूचे देश में धूमधाम से मनाई गई। 13 वर्षीय इन्दु एक दिन पार्टी के कार्यालय में जा पहुंची और बोली 'मुझे भी कांग्रेस का सदस्य बनाएं।' लोग हंस पड़े, बोले "तुम अभी बहुत छोटी हो। थोड़ी बड़ी हो जाओ तब हम तुम्हें सदस्य बनाएंगे।" इंदिरा जी को बात जची

नहो बोली "क्यो ।, जितना काम दूसरे वालिन्टयर करते है उतना तो मैं भी कर लूगी ।" उनके उत्साह को देखकर वहा बैठे लोगो की हँसी थम गई । किन्तु हमारा नियम है कि हम 21 वर्ष से पहले किसी को अपना सदस्य नही बनाते ।" इन्दिरा जी को यह बात अच्छी नही लगी ।" मातभूमि की रक्षा व सेवा के लिए आजादी के लिए लडने को हर किसी को अवसर मिलना चाहिए ।" जान आफ आर्क' का अपना आदर्श मानने वाली बहन की आत्मा कायर नही बनना चाहती थी" मैं अपनी कांग्रेस स्वय बनाऊगी ।' इन्दिरा ने माँ से पूछा था इसको क्या नाम दू । "वानर सेना" माँ ने उत्तर दिया । एक बार तो इन्दिरा जी ने इसे व्यगात्मक समझा किन्तु माँ कमला ने समझा दिया "जैसे बन्दरो ने लका को जीतने मे राम की मदद की और रावण को मारा, ऐसे ही तुम बापू की मदद करना ।" पुलिस की बाहर भीतर की हलचल को नेताओ तक व नेताओ की सरगर्मियो को उनके क्रान्तिकारी साथियो तक पहुचाने का काम इन्दु व उसकी वानर सेना ने अपने ऊपर लिया । स्वय वह कहती है "वानर सेना का काम था पुरुषो या वयस्को का काम हल्का करना जैसे राष्ट्रीय झण्डा सीना, उन्हे सुनाना, लोगो के लिए खाना बनाना, बैठको और रैलियो के घेराव, पानी पिलाना, जो कैदी लिखना नहीं जानते उनकी ओर से चिट्ठियाँ लिखना और पुलिस लाठी चार्ज मे घायल हुए कांग्रेस सेवादल के स्वयं सेवको को प्राथमिक चिकित्सा करना ।" (जीवन के कुछ पृष्ठ से) "बाद मे हमने सत्याग्रह जैसे आन्दोलनो मे भी भाग लिया । "मुझे अपने पिता के कांग्रेसाध्यक्ष पद पर पहुचने की अच्छी तरह से याद है । अधिवेशन मे 'पूर्ण स्वराज्य" के लक्ष्य की घोषणा की जाती थी उस प्रस्ताव का मसविदा मेरे पिता ने तैयार किया था । टाइप होने के बाद मैं उसे पढकर वोटर से अपने पिता को सुना रही थी । बाद मे पिता ने कहा "अब तुम इसे पढ चुकी हो इसलिए इससे वचन बद्ध भी हो गई हो ।"

2 फरवरी, 1931 को उन्हें अपने प्रिय दादा से सदा के लिए बिछुड़ना पड़ा। अप्रैल में वह अपने माता पिता के साथ श्री लंका यात्रा पर गईं। वहां से लौटी तो गांधी जी की सलाह पर माध्यमिक शिक्षा आ सिलसिला फिर चल पड़ा पहले पूना के Pupils Own School में फिर बम्बई में 1 जून 19 4 में वह उच्च शिक्षा के लिए गुरुदेव टैगोर के शान्ति निकेतन में प्रवेश लेकर गुरुदेव न ट ार के सानिध्य में आई। गुरुदेव ने टाम देखा रात्र की परम्, अनुशासन के प्रति आस्था और उन्होंने भविष्यवाणी की यह बालिका असाधारण है और उसमें सत्यता को जीने की आदत है।" सभी छात्राएं या उनसे प्रवे। पर स्वाभाविक उत्सुकता जानी कि देखें इन्दिरा रहती है किन्तु उनकी कल्पना के परिरूप "एक हुरे नाजे कातोमी रन्नी बड़ी हो शान बहुत ही साम्य खादी के कपड़ा में लिपटी।" यह क्या ? यही इन्दिरा नेहरू है 'काश्मीरी राजा" मोतीलाल की पाती इतनी सीधी सादी ? औरों की तरह ही शारीरिक श्रम करके आश्रम के नियमों का पूरी तरह पालन मणीपुरी नृत्य गुरु आज्ञा से सीखना, मृदु व्यवहार। यही कारण है कि जब टरण माता कमला के इलाज के कारण उन्हें शान्ति निकेतन से विदा लेकर विदेश जाना पड़ा तो विदा के समय गुरुदेव ने नेहरू जी को लेख में लिखा 'हमने भारी हृदय से इन्दिरा को विदा दी। उसने समस्त शिष्य एक स्वर में उसकी प्रशंसा करते हैं और मैं जानता हूं कि वह छात्रों में बहुत लोकप्रिय है। वह बड़ी मनमोहक व लिरा है जो प्यारे सहपाठियों व शिक्षकों में एक सुखद स्मृति छोड़ गई हैं।

इस प्रकार शैशव काल में इन्दु प्रियदर्शिनी के समक्ष था स्वतन्त्रता संग्राम में बिखरा राष्ट्रीय चरित्र, महान् दर्शन व महान् पिता, हरण किन्तु विदुषी माता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे गुरु द्वारा देश के लिए आत्मोत्सर्ग व लगातार जेल में जाते रहना व महात्मा गांधी जैसे सन्तों का आदान। बचपन में प्यारी बेटी इन्दु व। पिता का सानिध्य कम, जेल

से लिखे गए पत्र अधिक मिला करते थे जो उसके लिए जीवन का दर्शन बन कर रह गए। महात्मा गांधी ने उन पत्रों के विषय में टिप्पणी करते हुए नेहरू जी ने लिखा था। 'तुम्हारे पत्र बहुत अच्छे हैं। काश! तुम हिन्दी में लिख सकते। तुम्हारा विषय निस्संदेह बिल्कुल पुराने ढंग का है। मानव का आदि एक विवादपूर्ण विषय है। धर्म का अर्थ और भी विवादास्पद मामला। परन्तु इन मतभेदों से तुम्हारे पत्रों का मूल्य घट नहीं जाता उनका महत्त्व तुम्हारे निर्णयों की सचाई में नहीं परन्तु निरूपण के ढंग में और इस तथ्य में है कि तुमने इन्दु के हृदय तक पहुंचने और उसमें ज्ञान की प्यास जगाने की कोशिश की है।" शान्तिनिकेतन की शिक्षा की छाप उनके व्यक्तित्व पर अन्तिम समय तक रही। आश्रम का गुरु मंत्र "विपद मोरे रक्षा करो, ए नहीं मोर प्रार्थना। विपदे आमि ना जेनो करी भय।" अर्थात् मेरी यह प्रार्थना नहीं कि विपत्ति से मेरी रक्षा करो, मुझे योग्य करो कि विपत्ति से मैं कभी डरूं नहीं। यही उनके जीवन का गुरुमंत्र रहा।

28 फरवरी, 1936 स्वीटजरलैंड के लोसान सेनेटोरियम में माता कमला ने अन्तिम सांस ली। अकेली पड़ी इंदिरा फिर दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों की यात्रा के लिए पिता के साथ निकल पड़ी। 1937 में वे इंगलैंड पहुंचे और वहाँ आक्सफोर्ड के समरविले कॉलेज में प्रवेश लिया किन्तु भाग्य में एक स्थान पर रहकर पढ़ाई पूरी करना लिखा नहीं था। दादी स्वरूप की मृत्यु के साल भर बाद ही उन्होंने आक्सफाड छोड़ दिया और अपने पिता के साथ चैकोस्लाविया की यात्रा करके वापस पुनः भारत लौट आई।

26 मार्च, 1942 को उनका विवाह फिरोज गांधी के साथ हुआ। उसी वर्ष 16, सितम्बर को "भारत छोड़ो" आन्दोलन के अन्तर्गत उन्हें जेल जाना पड़ा। 13 मई को वे दो नो जेल से छूटीं। 12 अगस्त 1944 को उनकी बुआ कृष्णा हठीसिंह के घर बम्बई में राजीव का जन्म

हुआ। 14 दिसम्बर, 1946 को संजय का जन्म हुआ। 1947 की मई में इंदिरा जी परिवार सहित देहली आईं। देश को स्वतन्त्रता मिली, कई महापुरुषों के अथक परिश्रम व प्रयत्न से। नेहरु परिवार ने तो अपना सर्वस्व ही होम कर दिया था इस दिन के लिए। बड़े जोश व उल्लास से आजादी की अगवानी हुई परन्तु शीघ्र ही मधुर स्वर से सम्मोहन बिखेरता सितार का तार अप्रत्याशित रूप से टूट गया। अवसाद सम्पूर्ण देश में छा गया। पाकिस्तान बनने पर नर सहार और साम्प्रदायिकता का पैशाचिक व घृणित वातावरण और तत्पश्चात महात्मा गांधी की हत्या। अनेकानेक समस्याएं जो कि उस समय स्वतन्त्र भारत के प्रधानमन्त्री होने के नाते श्री नेहरु के सम्मुख आईं। माता–पिता, सहचरी व गुरु सबको खोकर नेहरु अकेले पड गए और फिर प्रधानमन्त्री पद की अत्यन्त व्यस्तता और दायित्व इन्दिरा जी को उस समय दोहरी भूमिका निभानी पडी पत्नी व पुत्री दोनों की। 1953 मे वह रानी एलीजाबेथ द्वितीय के राज्याभिषेक समारोह मे पिता की सहचारी बन कर गईं और सोवियत संघ व स्केण्डीनेविया देशों की यात्रा की। दो वर्ष बाद वह कांग्रेस कार्य समिति की सदस्या निर्वाचित हुई और सक्रिय राजनीति मे व्यस्त हो गईं। हिन्देशिया मे हुई बांडुग सम्मेलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उसी वर्ष कांग्रेस की केन्द्रीय निर्वाचन समिति की सदस्या बनी।

1958 में कांग्रेस केन्द्रीय संसदीय मण्डल ने उन्हें अपना सदस्य चुना और उसी साल सेंटियागो में के अन्तर्राष्ट्रीय बाल कल्याण सम्मेलन मे भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता के रूप मे शामिल हुईं। फरवरी 1959 मे कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद वह समूचे देश का आकर्षण बिन्दु बन गईं किन्तु साल भर बाद वह पद त्याग दिया। जनवरी 1960 में उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद से अलग होने की इच्छा प्रकट की। पर्यवेक्षकों का यह कहना है कि पति का बिगडता स्वास्थ्य ही शायद इसका मुख्य कारण रहा हो 18 सितम्बर, 1960 को वह अपना पति खो बैठी थी। उसी

वप पेरिस में यूनेस्को की अधिशासी मण्डल की सदस्या बनी। फिर आया 1962 का चीन भारत युद्ध। उनकी एक विश्वस्ततम् मित्र ने उस समय के उनके चित व वक्तत्व का एक चित्र खींचा है इन शब्दों म बॉमडिला गिर चुका था। तेजपुर खाली हो रहा था। मैं एक दिन तीनमूर्ति भवन पहुची तो वह जिद करे बैठी थी कि वे तेजपुर जाकर भारतीय सैनिकों का होसला बढ़ाएगी। पण्डित जी इससे बहुत खुश नही थे उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उनको वहा के खतरो से आगाह कराऊँ और जान न रोकू। पर वह मानी नही और गई। उनकी उपस्थिति से सचमुच वहाँ स्थित लोगो को होसला मिला। वे चीन–भारत युद्ध मे नागरिक सुरक्षा समिति की अध्यक्षा बनी। और उसके नेतृत्व मे युद्ध पीड़ितो और पुनर्वास के कार्यक्रमो को नये आयाम मिले।

इस बीच नेहरु जी के मन मे अपनी बेटी के प्रति स्नेह के साथ सम्मान का भाव भी पैदा हो गया था क्योंकि उसने कांग्रेस अध्यक्ष के उत्तरदायित्व भी बडी खूबी से निभाए थे। 19 I के मध्य मे श्रीमती गांधी ने नव स्वतन्त्र अफ्रीकी राज्यो की यात्रा के दौरान जोम्मो के मिल्टन ओचारे और ब्यूलिस न्यूरे जैसे सरकार के प्रधानो से भेंट की। नेहरु जी साथ उन्होंने केनडी से भेंट की और इन भेंटो मे श्रीमती गांधी की भूमिका देखकर अब नेहरु उनकी राय को सम्मान देने लगे थे।

इन्दिराजी प० नेहरु से राजनीति के दावपेच सीखे। उस समय भी वह उन पदनेताओ मे से समझी जाने लगी जो नेहरु के बाद पद समालने योग्य थी। अमेरीकी लेखक वेल्स हेलन ने अपनी अग्रेजी म लिखी पुस्तक ' नेहरु के बाद कौन ? ' में जिन आठ राजनेताओ की भविष्य की चर्चा की थी उनमें से एक वह भी थी। उस समय तक इन्दिरा जी अपने पत्त दिखाने व अपनी चाल चलने म माहिर हो चुकी थी।

अप्रेल 964 म न्यूयॉर्क म आयोजित भारतीय मेले की वह अध्यक्षा बनी। उनकी घनिष्ट मित्र पुपुल जयकर का कथन है कि ' जून

में यह "पुकार ही सीटी की आवाज में बदल गई थी। "इसी वर्ष मई के प्रथम सप्ताह में (27 मई 1964 को भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू का निधन हो गया। नेहरू के साथ एक युग का अन्त हुआ। श्री लालबहादुर शास्त्री नए प्रधानमंत्री बने और उनके आग्रह पर इंदिरा जी मंत्रिमंडल में शामिल हुईं और उन्हें सूचना और प्रसारण विभाग सौंपा गया। ताशकंद में युद्ध के उपरान्त समझौते के बाद शास्त्री जी का अकस्मात निधन हो गया। तब नेता पद के लिए इंदिरा जी का नाम प्रस्तावित हुआ। दुर्भाग्य से इस बार फिर नेतृत्व का संकट उपस्थित हुआ। इस समय बड़े पुराने और उच्च कांग्रेस पद विराजमान श्री मोरारजी देसाई व कामराज जी गुलजारीलाल नन्दा के मध्य चयन करने का प्रयास केन्द्रित कर रहे थे (बड़े नेताओं का गुट Syndicate) मुरार जी के मुकाबले नन्दा के पक्ष की पीठ थपथपा रहे थे। 1967 के आम चुनाव भी समीप थे और गांधी-नेहरू के पवित्र नामों की मान्यता (कांग्रेस को वोट प्राप्त करने के लिए) थी। मन्त्रणा के उपरान्त सिन्डीकेट श्रीमती गांधी का समर्थन प्राप्त कर रहे हैं कि श्रीमती गांधी ही क्यों नहीं ? सिण्डीकेट श्रीमती इंदिरा गांधी को प्रधान मंत्री मंजूर हुआ मगर इस बात पर कि मोरार जी उप प्रधानमन्त्री रहेंगे जो कि वास्तव में एक नया ही पद था। उनका विचार था कि इंदिरा जी कमजोर प्रधानमन्त्री साबित होंगी और नाम उनका और शासन सिण्डी-केट का होगा। 'गूंगी गुडिया' का नाम भी इंदिरा जी को दिया गया।

इस समय कांग्रेस ने अपेक्षाकृत युवा गुटों को एक नई शक्ति व स्फूर्ति का अनुभव हुआ और 1967 के चुनाव में दो परिणाम सम्मुख आए। एक तो यह सिद्ध हो गया कि सारे देश की जनता का हृदय नेहरू के पश्चात यदि कोई जीतने वाला कांग्रेसी नेता है तो वह इंदिरा गांधी ही है। दूसरे कामराज, अतुल्य घोष और एस०के० पाटिल जैसे दिग्गजों की हार से स्पष्ट हो गया कि चाहे कांग्रेस संगठन पर यह लोग कितने ही हावी हों, जनता में उनकी पकड़ व प्रभाव कम हो गया है।

इन चुनावों म लोकसभा की 525 सीटों में कांग्रेस को केवल 279 सीटें मिली। (जबकि पहले 361 थी) आठ राज्यों में बहुमत नहीं मिला। किन्तु अब इन्दिरा जी "गूंगी गुड़िया" नहीं रह गई थी। डॉ लोहिया ने पहले उनको यह नाम दिया था। मोरारजी को उप-प्रधानमंत्री तो बनाया गया किन्तु गृह मंत्रालय नहीं दिया गया। सिण्डीकेट के इच्छा विरुद्ध डा. राधाकृष्णन को दूसरा कार्यकाल नहीं दिया गया। मोरारजी ने समर्थन किया किन्तु वह प्रगतिशील नीतियों से प्रतिबद्ध कभी नहीं थी। नेहरु समझौतेवादी थे किन्तु इन्दिरा जी व्यवहारिक थी। नेहरु के समान विचारक होने के कारण वह उस समय पश्चिम की आर्थिक नीतियों से चकाचौंध रही और अमरीका द्वारा नियन्त्रित विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की सलाह पर रु का 57.2 अवमूल्यन कर बैठी। फलस्वरूप आने वाले चुनावों मे कांग्रेस को गहरा धक्का लगा कारण यह था कि महंगाई म तेजी से वृद्धि होने लगी और मध्यम वर्ग का जीवन निर्वाह कठिन हो गया। कामराज न इतना विरोध पहले ही किया था किन्तु इस विषय म इन्दिरा जी ने कांग्रेस हाई कमान से कोई विचार विमर्श नहीं किया था। कांग्रेस के युवा तुर्क और समाजवादी कहलाने वाले तत्व जैसे चन्द्रशेखर, दिनेशसिंह रघुनाथ रेड्डी, के आर गणेश, चन्द्रजीत यादव पहले से ही वामपंथी दिशा की ओर मोड़ देने की मांग कर रहे थे। इन्दिरा गांधी ने इन सभी को मोरारजी और दक्षिण पंथी नेताओं के खिलाफ प्रयोग किया और यहीं से उनकी वामपंथी और शोषित पीड़ित वर्ग के हितैषी के रूप में छवि उभरने लगी।

इन्दिरा जी जनवरी, 1956 मे प्रधानमंत्री बनी और उन्होंने 31 अक्टूबर, 1984 को अंतिम सांस लेने तक देश की बागडोर सम्भाली। इस अवधि म राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जीवन मे चुनौतियों का सामना करती रही। दो दशक तक चले "इन्दिरा युग" की उपलब्धियों की कहानी बहुत जानी मानी है। इस समय अधिक दोहराना उचित

नहीं। प्रसिद्ध लेखिका शिवानी के शब्दों में 'नारी के लिए राजनीति का मार्ग अधिक कंटकाकीर्ण रहता है। किन्तु सफलता के शिखर को गांधी इन्दिरा जी स्वयं ही क्योंकि वे हिरण्मय तु आसन पर आसीन नहीं हुई वरन् उन्होंने भी उनके हाथ उसी आसन पर आसीन कर लिया।' श्रीमती गांधी की कहानी भारत की ऐसी नारी की कहानी है जो भीतर से एक दम अकेली, दुःखी, टूटी और भयभीत थी लेकिन ऊपर से सदा धन वैभव, शक्ति, सम्मान और मान्यता से लिपटी थी कि दुश्मन भी उनका सामना करने में संकोच करते थे और मित्र एवं परिचित सब सामान्य जन उन पर न्योछावर हो जाते थे।"

नारी के रूप में

नारी के रूप में इन्दिरा गांधी सदा ही चर्चित रही है। इस अतिचर्चा के फलस्वरूप कभी उन्हें "सिंहवाहिनी दुर्गा" की संज्ञा दी गई तो कभी ईर्ष्यालु काली की। कभी उन्हें विश्व की महानतम 'महिला राजनीतिज्ञ" बताया गया तो कभी एक अहंवादी तानाशाह। स्वयं अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व या अपने उठाए कदमों को लेकर न तो कभी उन्होंने सफाई पेश की और न ही दावे। आज की स्थिति ने इन्दिरा जी को एक नारी के रूप में स्मरण करने पर उनके व्यक्तित्व का जो पहलू सबसे पहले स्मरण हो आता है वह है उनका निर्भीक व जुझारूपन। इस प्रकार की निर्भिकता कई बार तीखी एवं निर्मम प्रतीत होती थी। कई अवसर आए जब पत्रकार जगत, बुद्धिजीवियों और देश के पढ़े-लिखे मध्यवर्ग लोगों ने खुलकर उत्तेजनापूर्वक उनकी नीतियों की निंदा की पर विडम्बना यही थी कि इसी वर्ग की एक महिला कहते-कहते फफक पड़ी थी "वह तो हमारी सब की माँ थी, हम तो अनाथ महसूस कर रही हैं।" देश के अधिक पढ़े-लिखे और तर्क बुद्धिजीवियों को भले ही इस अनाम स्त्री की वेदना अत्यधिक भावुक लगे परंतु उसके मुंह से उस समय देश की वे लाखों करोड़ों औरतों भी बोल रही थी जिन्हें अपनी स्त्री होने का एकमात्र गर्व हो यही था कि "इंदिरा जी की मानसिकता बुनियादी तौर पर एक हिंदु स्त्री की थी। वह स्त्री जो परिवार की मर्यादा और इज्जत का

लेकर मर मिटने का हौसला रखती हैं। उनका राष्ट्र ही उनका परिवार था। "यह कथन है हिन्दी के वरिष्ठ कवि एवं पत्रकार तथा लेखक सासद श्रीकान्त वर्मा का जो पिछले 30 वर्षों से इन्दिरा गांधी के सम्पर्क में रहे थे। उन्होंने प्रमुख और विचारशील महिलाओं की प्रसिद्ध पत्रिका "वामा" का इण्टरव्यु देते हुए कहा, "अपनी पुत्र वधु मेनका गांधी से सम्बन्ध विच्छेद उन्हें इसलिए अधिक कष्टप्रद लगा था कि इससे और विच्छेद के बाद वे उनके परिवार की मर्यादा सार्वजनिक तौर से खण्डित हुई थी उन्हें अपनी पुत्र वधु की स्वतन्त्रता पर कतई आपत्ति नहीं थी उस तरीके पर आपत्ति थी जिससे वह एक सार्वजनिक हो-हल्ले के साथ परिवार से अलग हो गई। यही बात राष्ट्र के साथ भी थी।

बड़े कुल में जन्मी विदेश में शिक्षण प्राप्त करती हुई देश की बागडोर सम्भालने में भी वह कभी नहीं भूली कि मूलतः वह नारी हैं प्रसिद्ध लेखिका मृणाल पाण्डे का कथन है, ' जहां श्रीमती गांधी ने अपने स्त्री होने को एक बोझ की तरह नहीं बल्कि एक सहज स्थिति की तरह स्वीकार किया। वही किन्तु उनकी ताकत की गुप्त बात है। उनसे पहली बार मिलने वाले लग भग हर व्यक्ति की यह प्रतिक्रिया होती थी कि इतनी शक्तिशाली और सत्तावान कही जाने वाली इस महिला का व्यक्तित्व देखने में कितना नारीत्वपूर्ण और कितना कोमल था। "वे इसे एक तरह से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्त्री शक्ति की एक बहुत बड़ी जीत समझती है। इन्दिरा जी स्वयं के सम्बन्ध में एक कथन है, ' इन्दिरा गांधी एक औरत का नाम नहीं बल्कि यह आम जनता की सेवा में जुड़े हुए दर्शन का नाम है। "अपनी हत्या के एक दिन पहले भुवनेश्वर में भाषण देते हुए कहा, ' मैं देश सेवा में मर भी गई तो इस पर मुझे गर्व होगा। मेरे रक्त की हर एक बूंद देश के विकास में योगदान देगी और उससे देश सशक्त और गतिशील बनेगा।' यह जानती थी कि देश में उनके खून के प्यासे अपनी-अपनी घात में है। देश और विदेशी पत्रकार इसमें जुटे हुए हैं। अपने पिता से प्राप्त पत्रों में उन्हें यह शिक्षा मिली थी।" भय बुरी चीज है

और तुम्हारे लायक नहीं। बहादुर बनो और तब सब काम बन जायेंगे। सचमुच वह अगर निडरता से काम नहीं लेती तो मर्दों की इस दुनिया में वह अपनी सत्ता कायम नहीं कर सकती थी। आज स्मरण हो आता है उनके जन्म के समय का एक संस्मरण। उनकी दादी स्वरूपरानी ने अफसोस जाहिर किया कि उनके पुत्र जवाहर को पुत्री प्राप्त हुई है तब मोतीलाल जी ने उन्हें मना किया था कि "देखना जवाहर की बेटी हजारों बेटों से भी बढ़कर साबित होगी।" वह हजारों ही नहीं करोड़ों भारत पुत्रों से बेहतर साबित हुई। यह सत्य एक व्यंग एवं मजाक के रूप में अक्सर व्यक्त होता था कि श्रीमती गांधी के मंत्रीमण्डल में एक ही मर्द और वह है स्वयं स्मरण हो आता है इन्दिरा जी का मंत्रित्व व प्रधानमंत्रीत्व काल। स्त्री का भारतीय समाज में कोई स्वयं अस्तित्व नहीं। वह किसी की बेटी, किसी की पत्नी व किसी की मां दादी कहलाती है और इसी रूप में अधिक पहचानी जाती है। उसी प्रकार नेहरू जी की मृत्युपरान्त जब वह लालबहादुर शास्त्री मंत्रीमण्डल में सूचना व प्रसारण मंत्री के रूप शामिल हुई तो वह "नेहरू की बेटी" के रूप में ही जानी जाती थी। उनका स्वतन्त्र व्यक्तित्व बन रहा था किन्तु उनके प्रधानमंत्री बनने तक भी नेहरू की बेटी का रूप व आवरण ही जनमानस के हृदय पटल पर छाया रहा। उनके प्रधानमंत्रीत्व काल में महिलाएं बहुत गौरवान्वित अनुभव करती थी किन्तु व्यंग्यात्मक भाषा में महिलाओं को अक्सर सुनना पड़ता था "इन्दिरा गांधी का राज है।" इस व्यंग से पुरुषों का अहम् भले ही बोल रहा हो किन्तु इस तथ्य को कोई भी नहीं नकार सकता कि इन्दिरा जी वह महिला थी जो लग-भग 16 वर्ष तक न केवल प्रधानमंत्री रही किन्तु जनमानस के हृदय पटल पर भी एक राज्य करती रही।

"She is the only man in India" यह वाक्य प्रातःकाल कहा और सुना जाता था और श्रीमतीगांधी के पौरुषोचित्व गुणों को स्वीकारा जाता था। उनके आत्म विश्वास के साथ बढ़ते कदम, पैनी दृष्टि व स्फुर्ति को स्पष्ट देखा जा सकता था।

उनके सामने खड़े होकर लम्बे-लम्बे पुरुष भी स्वयं को बौना अनुभव करता था। उनकी राजनैतिक, कूटनीतिज्ञ विचारधारा व सूझबूझ कुछ भ्रधीनता लिए हुई थी। चाहे उनकी विचारधारा व कृतित्व से हर कोई सहमत नही होता था किन्तु उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण थे जिन्हें आत्मघात करने का हर कोई प्रयत्न करता था। उनके कट्टर से कट्टर आलोचक भी उनके व्यक्तित्व प्रतिभा के कायल थे और इस बात पर सहमत थे कि उन्होंने देश को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र पर ऊंचा उठाया है।

उनसे पहली बार मिलने पर प्रत्येक व्यक्ति की पहली प्रतिक्रिया होती थी कि इतनी शक्तिशाली व सत्तावान कही जाने वाली महिला का व्यक्तित्व कितना महत्वपूर्ण व कोमल था। लेखिका की स्वयं ही यह प्रतिक्रिया थी जब वह अगस्त, 1981 में एन आई सी पी ए के एक सम्मेलन में देहली गई थी जिसमें सम्पूर्ण भारत के लगभग सभी प्रांतों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। सभी शिक्षा विभाग में उपनिदेशक के स्तर के थे न सभी प्रतिभागियों चण्डीगढ़, आगरा व अन्य दर्शनीय स्थानों के पर्यटन के स्थान पर एन आई पी ए, अधिकारियों से यह माग की थी। कि इन्दिरा जी के निवास स्थान पर उनसे समय माग कर भेंट करना चाहते हैं। मेरी आखो के सामने आज भी वह अविस्मरणीय दिवस आ जाता है। दूर से देखने का अवसर तो बहुत बार प्राप्त हुआ था। दो बार तो वह बीकानेर ही पधारी थी। टी वी पर तो प्रतिदिन ही उनके दर्शन होते थे किन्तु इतने समीप से उनसे हाथ मिलाने से लेकर बातचीत करने का अवसर उसी दिन प्राप्त हुआ। सफदरगंज में अपने आवास से, हाथ में छतरी लिए हुआ शीघ्रता से चलता हुआ उनका वह सत्य व्यक्तित्व क्षण भर में ही आंखों के सम्मुख दीक्षित हो जाता है अब तो यह दृश्य मुझे और भी याद आता है। बस ये यह क्रूर हत्यारे, जिन्होंने रक्षक होते हुए भी भक्षक बनने का यही अवसर ढूंढ निकाला।

नारी के कई रूप है —बेटी, पत्नी, मा और बहिन आदि आदि। हर रूप मे इन्दिरा जी अपनी विलक्षण प्रतिभा व अनोखापन लिए हुए थी। विश्लेषण करते हुए उनका सब प्रथम 'बेटी का रूप' ही एक ऐसी विलक्षण बेटी के रूप म, प्रतिबिम्बित होता है जिसे प नेहरु की बेटी के रूप मे, अधिक जाना जाता रहा है "कमला नेहरु की बेटी" बेटी के रूप म कम। किन्तु अपनी मा से भी वह नियाति द्वारा दिए हुए थोडे से समय मे सीख पाई। एक पत्रकार से हुई बातचीत मे उन्होने अपनी माँ के बारे मे याद करते हुए कहा था "मैंने उन्ह चोट खाते देखा था इसीलिए निश्चय किया था कि जिन्दगी मे कभी चोट नही खाऊगी।" 19 नवम्बर, 1917 जब रूस मे जन क्रांति का समय था, कमजोर और नाजवन्ती कमला के एक लडकी पैदा हुई जिसे दादा मोतीलाल नहरु अपनी माता इन्दिरा के नाम से पुकारना चाहते थे और मां कमला ने नाम रखा 'प्रियदर्शिनी" बाद मे समझौते के रूप मे 'इन्दिरा प्रियदर्शिनी चल निकला। मोतीलाल नहरु की मा बडी दबग औरत थी जिससे वह स्वय भी दुबके-दुबके रहते थे। यही गुण शायद इन्दिरा को विरासत म मिले। भारत की इंदिरा को देखते हुए भारत कोकिला सरोजनी नायडू ने कहा था "मैंने इतनी स्वाभिमानी बच्ची नही देखी।

बचपन के कडवे अनुभव–परम्परागत अभाव बालिका इन्दिरा को किसी और ही ससार की ओर इगित कर रहा था किन्तु चतु दिक का राजनैतिक वातावरण उसे कठोर सघर्ष की ओर घसीट रहा था। जवाहरलाल गाधी जी से प्रभावित थे किन्तु अभी मोतीलाल नहरु अछुते थे। सयोग की बात है एक बार गाधी जी आनन्द भवन पधारे और इसके बाद ही आनन्दभवन की हवा ही बदल गई। मोतीलाल जी ही कांग्रेसी नही बन गए अपितु आनन्द भवन ही राष्ट्रीय गतिविधियो का केन्द्र बन गया। तब इन्दिरा जी केवल 3-4 वष की थी। वह बातें समझ तो नही पाती थी किन्तु उनके मन पर यह घटनाए अमिट छाप छोड गई। कृष्णा हठीसिंह ने अपनी पुस्तक

मे श्री इंदिरा जी के बचपन का कुछ चित्रण किया है जो इस कहावत को चरितार्थ करता है कि पूत के पाव पालने मे ही दिखाई देते हैं। श्रीमती हठीसिंह लिखती है 'अभी कुछ महीने लडकियो को एक सभा मे उन्होने बताया कि जिन्दगी भर जॉन आफ आर्क उनकी प्रेरणामूर्ति बनी रही। यह भी उन्होंने बताया कि जान आफ आर्क को गिरफ्तार किया गया था व अग्नीकुंड मे जलाया गया था। उन्होने कहा "देश के लिए जो अच्छा काम करना चाहते हैं उनके नसीब मे यही होता है। हमे यह तय कर लेना चाहिए कि किस चीज का महत्व हमारे लिए ज्यादा है? अगर देश का महत्व हमारे लिए और चीजो से अधिक है तो इसके लिए अग्नीकुंड मे जलना या इससे बडी सजा भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए। आज उनकी हत्या के परिप्रेक्ष मे यह कथन कितना महत्वपूर्ण हो गया है।

इंदिरा जी की शिक्षा मे जो अव्यवस्था शुरु-शुरु मे रही थी लगातार बनी रही। आधा दजन स्कूल बदलने व विदेश जाने पर भी वह बाकायदा शिक्षा ग्रहण न कर सकी।

नेहरू परिवार शायद साधारण हिन्दु परिवार की तरह ही लडके के जन्म से ही अधिक सतुष्ट होता। यही अभाव सबको खटक रहा था इसलिए शायद इंदिरा को लडको जसे कपडे पहनाकर वे लोग मनोवैज्ञानिक सान्तवना प्राप्त करना चाहते थे। ललिता शास्त्री इन दिनो आनन्द भवन गई तो उन्होने देखा कमला जी किसी लडके को कपडे पहना रही थी। उन्होने शास्त्री जी से पूछा 'आप तो कहते थे कि पंडित जी के कोई लडका नही है" शास्त्री जी बोले "यही लडका इंदिरा प्रियदर्शिनी है।'

लाड-प्यार और सुख वैभव की प्रचुरता के बावजूद भी प्रियदर्शिनी का अकेलापन बढ़ता ही गया। माँ की बीमारी ने इंदिरा को आनन्द भवन के कमरा मे ऐसा खिलौना बनने को मजबूर किया जिसते यदा-कदा क्षण भर कोई बच्चा खेल लेता है और दूसरी दिशा मे निकल

जाता है। जब वह पांच वर्ष की थी तो उनके पिता ने अपने पिता को जेल से एक पत्र लिखा था। कमला ने लिखा है कि इन्दु दिन पर दिन जिद्दी होती जा रही है और पढाई की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देती है। मेरी इच्छा है कि यदि हो सके तो उसकी पढाई का कोई प्रबंध अवश्य किया जावे।" इस बीच उसे माँ से भी अलग रखने की कोशिश की गई क्योंकि कमला क्षय रोग से पीडित थी। मोतीलाल जी ने जवाहरलाल जी को एक पत्र मे लिखा 'दिल्ली से बम्बई तक के सफर में मैंने देखा कि इन्दु कमला को बार-बार चूमती रही, यह बन्द होना चाहिए। अगर हो सके तो ऐसा करो कि वह एक दूसरे से इस तरह लिपटें नहीं।

बालिका इंदिरा में देश के लिए युद्ध करने की भावना थी और ऐसे विचार अनायास नहीं आ गए। उनने जो कुछ अपनी आंखों से देखा उसी का परिणाम था कि बचपन से ही, बल्कि जन्म से ही, इंदिरा जी ने जब से होश सम्भाला भारत माता की जय" "गांधी जी की जय" नेहरू जी की जय" के साथ "इन्कलाब जिन्दाबाद" के नारे सुने। वह इन नारों का अर्थ नहीं समझती थी किन्तु इस तरह के नारे हजारों लोगों की भीड लगाती तो उनका मन भी उत्साह से भर जाता। आनन्द भवन राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र हुआ था। दिन-रात स्वतन्त्रता की चर्चा होती, बड़े-बड़े नेता आवें-जावें, सभायें होती लोग पकड़े जाते और जेल भेज दिए जाते। बालिका इन्दु को यह सब देखकर आनन्द आता। उन्हें जूलूसों में शामिल होना भी अच्छा लगता था। कभी-कभी वह अपनी गुडियों की कतार सजाकर उसका जुलूस निकालती थी और भारत माता की जय ! के नारे लगाती। राजनैतिक गतिविधियां क्योंकि आनन्द भवन में केन्द्रित थी—अतः बालिका इन्दु को बड़े-बड़े नेताओं (गांधी जी जैसे) के सम्पर्क में आने का, उनकी बातें सुनने और उनका स्नेह दुलार पाने का अवसर मिल सका। संघर्ष का प्रथम अनुभव बालिका इन्दु को तीन वर्ष की आयु में हुआ जब उनकी बुआ की शादी थी। कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक भी इसी मौके पर की गई क्योंकि सभी विशिष्ट नेताओं का

शादी में सम्मिलित होना अवश्य-भावी था। यह खबर सरकार को भी लगी। पुलिस को आदेश हुआ कि विद्रोह को कुचल दिया जाय। भीतर गांधीजी व अन्य कांग्रेसी बैठे थे। और जवाहर बाहर पुलिस से उलझ रहे थे। फेरों का समय हो गया था। यह पहला अवसर था जब इन्दु को यह प्रतीत हुआ कि पुलिस ज्यादती कर रही है। बेकार ही पापू से उलझ रही है। कुछ दिनों बाद इंदिरा को कड़वी घूंट और पीने को मिली। जब मोतीलाल को गिरफ्तार करने पुलिस आनन्दभवन आ टपकी। अधिकारी मकान की तलाशी लेना चाहते थे। मोतीलाल जी ने कहा अच्छी तरह तलाशी लोग तो पूरे छः महीने लग जायेंगे। उन्हें जब पता चला कि वस्तुतः उनकी गिरफ्तारी के वारंट लेकर ही आए हैं तो वह उनके साथ चल दिए। जवाहरलाल नेहरु कांग्रेस कार्यालय से घर लौटे तो वह भी गिरफ्तार कर लिए गए। इंदु के सामने दादू व पापू को पुलिस ले गई? इन्दु जब दोनों को मिलाने अदालत गई तो दादू ने उन्हें लाड़ में गोद में उठा लिया। इन्दु का मन भर आया। रोने को ही थी कि दादू ने समझाया 'तुम बहादुर हो ना बहादुर बच्चे रोया नहीं करते।' इंदु घर आई तो पाया पुलिस ने आनन्द भवन को घेर रखा था। और एक एक बेश कीमती सामान बाहर फेंका जा रहा था। इंदु को क्रोध आया और उसने एक कालीन पर पैर अड़ाते हुए कहा खबरदार, इसे नहीं ले सकते। यह तुम्हारा नहीं, हमारा है।'

अपनी आत्म कथा में नेहरु जी ने लिखा है कांग्रेस की नीति जुर्माना अदा न करने की थी। आय दिन पुलिस आती और थोड़ा बहुत फर्नीचर ले जाती। इस तरह की लगातार लूट से भरी चार वर्षीय बेटी इंदु नाराज थी और उसने पुलिस से विरोध करते हुए अपनी नाखुशी का इजहार भी किया।

यह देखकर तो इंदु को रोना ही आ गया कि उसके सुंदर लॉन को, जिस पर खेला करती थी, पुलिस के घोड़ों ने रौंद कर चौपट ही कर

दिया। इसके पश्चात् इन्दु को साबरमति के कांग्रेस अधिवेशन मे भाग लेने का अवसर मिला। क्योंकि नेहरु परिवार की सभी महिलाए वहा गई। सभी तीसरी श्रेणी मे गए व गाडी जहा-जहा रूकती वहा असंख्य लोग नारे लगाते हुए मिलते 'नेहरु जी जिन्दाबाद" भारत माता की जय" इस उद्घोष से बालिका इन्दु प्रभावित हुई व नेहरु परिवार के स्वागत व सम्मान से उन्हे अनूठी गौरव मिश्रित अनुभूति हुई। तत्पश्चात् एक घटना ने तो इन्दु को झकझोर ही दिया। नेहरु परिवार की एक महिला इन्दु के के लिए विदेश व फ्रास का एक सुन्दर फ्राक ले आई-कमला नेहरु ने समझाने का प्रयत्न किया कि 'हम लोग विदेशी कपडा पहनते नही' किन्तु महिला को आशा थी कि बालिका प्रलोभन मे आ जावेगी-4 5 वर्ष की बालिका देशी-विदेशी क्या समझ पायेगी, किन्तु बालिका के विदेशी कपडो के बारे में घर के बड़ो की बात को तोते की तरह दोहरा दी।

महिला ने तर्क किया 'जिस गुडिया से तुम खेलती हो, वह भी तो विदेशी है।" दादू व बापू के जेल जाने के पश्चात् गुडिया ही बालिका की एक मात्र साथ थी किन्तु दादू और पापू भी विदेशी वस्तुओ के बहिष्कार स्वरूप ही जेल गए थे। सघर्ष करते हुए बालिका ने आनन्द भवन की छत पर गुडिया का दाह संस्कार कर दिया। कई दिनो तक खाना पीना बन्द रहा रोई भी किन्तु विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की जो भावना पुष्ट हुई उससे बालिका इन्दु को एक नई दिशा मी।

इन्दिरा जी ने स्वय कहा "मैंने दिल को कडा किया और गुडिया मे आग लगा दी। मैं अपने को सम्भाल नहीं पाई और फूट फूटकर रो पडी। लगा जैसे आंसू कभी थमेगे ही नही। इस घटना के बाद मैं काफी दिन तक बीमार रही। आज भी मुझे माचिस की तीली जलाने से नफरत होती है क्योंकि वह दृश्य मेरी आंखो के सामने उभर उठता है।

उन दिनो मेरा प्रिय खेल था-मैं घर के ज्यादा से ज्यादा नौकरो को इकट्ठा कर लेती और टेबल पर खडी होकर भाषण देती। घर में

अवसर हो रही बातचीत के दौरान मैंने कुछ वाक्य सुन रखे थे। अतः भाषण में मैं इन्हीं वाक्यों को बेहतरीन ढंग से दोहराती। इन्दिरा गांधी जीवन के कुछ पृष्ठों में।

"हमारे परिवार की एक मित्र सुन्दरा गारताबाई ने मुझे बताया कि जब मैं 7–8 वर्ष की थी तब मैंने सूत कातने वाले बच्चों की एक टोली बनाई। मैंने गांधी जी से पूछा था कि आज़ादी की लड़ाई में मैं क्या योगदान दे सकती हूं उन्होंने सूत कातने वाले दल बनाने का सुझाव दिया था।"

आनन्द भवन में इन्दिरा की राजनीतिक शिक्षा हुई थी तो तीन मूर्ति भवन उनके राजनीतिक प्रशिक्षण का स्थल बना। प्रधानमंत्री भवन की परिचारिका के रूप में उन्हें राजनीतिज्ञों और अन्य नीति-निर्धारकों को निकट से देखने का जो अवसर मिला उससे इंदिरा जी को देशी और विदेशी राजनीति की शतरंज की गुत्थियों को समझने व सुलझाने का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ। राजनीति को वह कितना समझ पाई यह तो आगे के वर्षों में खुला किन्तु विश्व की पारखी दृष्टि उनकी लगातार जांचने में लगी थी यह इंदिरा जी की बड़ी उपलब्धि थी व उनका सत्ता में आना ही कारगर सिद्ध हुई। राजनीतिक के रूप में इंदिरा का पहला रूप केवल केरल की नम्बूदरीपाद सरकार को बर्खास्त करने के संदर्भ में उभर कर सामने आया।

सबसे अच्छे उनके शिक्षक थे उनके पिता जो बराबर पुत्री को पत्र लिखते रहे और उनसे अपने अनुभव। बचपन की ज़िद भी उनसे नहीं छूटी। बीमार मां को इन्दिरा की ज़िद और कमज़ोर स्वास्थ्य की चिन्ता मरते दम तक सताती रही। इसी दिन का इन्दिरा ने आने वाले वर्षों में कवच की तरह ओढ़ लिया। कमला की मौत इन्दिरा को अपने पिता के अधिक निकट ले आई व इतिहास में पिता पुत्री के एसे सहयोग ने जन्म लिया जो अपनी अमिट छाप इतिहास के पृष्ठों छोड़ गयी।

2 फरवरी 1959 को श्रीमती गांधी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 52 वीं अध्यक्ष चुनी गईं। वह नेहरू परिवार की तीसरी सदस्य थीं और चौथी स्त्री जो इस पद पर पहुंच पाईं। नेहरू ने कहा "पहले वह मेरी साथी थी, फिर सहयोगी हो गई और अब मेरी नेता बन गई।" पहला पहला काम अध्यक्ष के रूप में उन्होंने यह किया कि अपने पिता को कांग्रेस की केन्द्रीय कार्य समिति से पृथक कर दिया। यह बड़ी सूझ-बूझ का काम था क्योंकि भले ही उनके क्रियाकलाप में नेहरू जीवन परामर्श महत्वपूर्ण रहा हो इंदिरा इन क्रियाकलापों के उत्तराधिकार से प्रधानमंत्री को अलग रखना चाहती थीं। यह वह समय था। जब कांग्रेस संगठन में नितान्त अव्यवस्था व्याप्त थी जिसकी सबसे बड़ी कीमत पार्टी को केरल में अपनी पराजय से देनी पड़ी। प्रसिद्ध पत्रकार डी आर मनकेकर के शब्दों में "नितान्त अनुशासनहीनता, आचार संहिता या जन आचरण के स्तर के अभाव के मतदाताओं की निष्ठा और अनुशासन की तस्वीर गिर गई थी साम्यवादियों की निष्ठा और अनुशासन को मतदाता नजर अन्दाज न कर सके। साम्यवादियों ने केरल में मूलभूत परिवर्तन करने शुरू कर दिए थे और इन परिवर्तनों को वह येन केन प्रकारेण लागू करने लग गए थे। केरल में दौरे से लौटने पर श्रीमती गांधी ने अपना मत बना लिया था और जब एक पत्रकार ने नेहरू जी से पूछा 'क्या आप केरल सरकार को बर्खास्त करेंगे।" तो कोई भी उग्र कदम उठाने में हिचकिचाते हुए नेहरू जी ने कहा "वह भी निर्वाचित सरकार है।" इन्दिरा जी पीछे से एकदम आगे आईं और तपाक से बोलीं "जी हां मैं उस सरकार को बर्खास्त करने की मांग करती हूं।" स्वयं राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के पास गई और 31 जुलाई 1959 को शाम को 6 बजे राष्ट्रपति भवन से विशेष आदेश जारी करके केरल में केन्द्रीय शासन की घोषणा कर दी गई।"

यह कदम इन्दिरा जी के लिए एक चुनौती लिए हुए भी था क्योंकि अब यह उत्तरदायित्व उन पर आ गया था कि अब केरल में सर-

सार बनाने मे सफल हो जाये साम्यवादियो को हराना आसान नही था क्योकि उस पार्टी ने मतदाताओ का विश्वास नहीं खोया था। इंदिरा जी ने प्रजा समाजवादी पार्टी व मुस्लिम लीग से चुनावी समझौता कर लिया। उनका तर्क था "मैं नही मानती कि केरल मुस्लिम लीग और से अधिक साम्प्रदायिक है–आपको साम्प्रदायिक दलो के साथ चलना ही होगा" और इस प्रकार कांग्रेस की जीत का राज रहा इस पार्टी द्वारा अल्पमत के आधार पर सरकार की परम्परा। साम्यवादियो का मत प्रतिशत 35 27 से बढकर 43% हो गया मगर सीटो की सख्या गिरी 60 से 2[illegible] तक। इन्दिरा जी के राजनैतिक करिश्मा का पहला प्रदर्शन था। मगर नेहरु की उपस्थिति और लोकप्रियता की चकाचौंध म राजनायिक इन्दिरा गाधी के पहले अध्याय को साफ साफ नही पढा था मगर केरल की कार्यवाही नेहरु और इंदिरा की कार्यशैलियो की विभाजन रेखा गाथी केरल मे मुस्लिम लीग के साथ समझौते के बाद उडीसा के भूतपूव सामन्तो की गणतन्त्र परिषद के साथ साझी सरकार बनाना इस दिशा में एक और कदम था। इदिरा गाधी ने पिता की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तक फिर एकाकीपन महसूस किया। वह दबी दबी रहने लगीं, ज्यादातर खामोश। इस प्रकार 27 मई, 1964 को समाप्त हुआ इंदिरा का वह रूप जो 'जवाहरलाल की बेटी' होते हुए भी सहचरी, परिचारिका, सलाहकार और नेहरु जी के शब्दो मे 'अब नेता भी हो गई थी। उनके पिता के साथ बेटी के रूप मे 1917–64 का यह काल न केवल इदिरा के लिए जननेता बनने का प्रशिक्षण काल था। पर जैसा मै सोचती हू शायद उनके जीवन के अमूल्य क्षण थे जब बिना उत्तरदायित्वों के भी राजनायीक जीवन को इतना प्रभावित करती रहीं।

फिरोज राष्ट्रीय आन्दोलन मे शामिल हो गए थे और हमारे घर अक्सर आया करते थे शांतिनिकेतन जाने स पूर्व ही उन्होने मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रखा पर तब मैंने ना कर दी थी। इस बार मै उन्होंने

मेरी माँ से भी बात की थी। मैंने अपने माता–पिता से इस बारे मे बात नही की थी। मैं विदेश से भारत लौट रही थी और फिरोज भी इगलैण्ड मे ही थे। पढ़ाई के लिए आक्सफोर्ड चुनने का मेरा यह भी कारण था। मैं उन्हें दोस्त ज्यादा समझती थी। मैं मेरे और परिवार तथा भारत के बीच खड़ी। मैं फिर पेरिस चली गई थी और फिरोज को वहां मुझे मिलता था। परिस मे माँ मात्र की सीढ़ियों पर मने फिरोज के प्रस्ताव पर अन्त त हा भी भर दी। पर हमने इस बारे मे किसी को नही बताया इंदिरा गांधी के पुपुलदास को दिए गए साक्ष्यो पर आधारित जीवन के कुछ पृष्ट से")

☐

पत्नि के रुप में

26 मार्च, 1942 को इन्दिरा नेहरू 'इन्दिरा' गांधी बन गई यह विवाह अनूठा था। उल्लास और राष्ट्रीयता के साथ एक अजीब सी टीस न विवाह मण्डप को त्रिवेणी सा पावन बना दिया था। जवाहरलाल नेहरू का विवाह हुआ था तो कमला जी विदेशी कीमती साड़ी और गहनों स लदी थी। केवल 26 वर्ष पहले माँ-बापू का विवाह बड़ी धूमधाम और कश्मीरी राजा मोतीलाल ने शानो शौकत से किया था किन्तु इन्दिरा जी मण्डप म नेहरू जी के हाथ से कते हुए सूत की साड़ी पहनी थी ' मण्डप म नेहरू जी बेटी के विवाह के उल्लास से पूर्णतया अपने को खो देना चाहते थे पर उनकी डबडबाई आखे कह रही थी कमला काश तुम भी होती। मैं निपट अकेलापन महसूस कर रहा हूँ।' एक पुस्तक म श्रीमती इन्दिरा गाधी ने लिखा है।

उन दिनो म का वेट मे पढ रही उन दिनो की बात है। नमक स याग्रह के दौरान एक स्कूल म ध्वजारोपण समारोह था। फिरोज उसी स्कूल म पढ रहे थे। मेरे विचार से फिरोज ने पहले पहले मुझे वही देखा यहा किसी और व्यक्ति झण्डा फहराना था। पर वहा लाठी-चार्ज हो गया और झण्डा फहराने वाले व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। उन्होने मुझे झण्डा थमाते हुए कहा इसे गिरने मत देना "धक्का-मुक्की म मैं गिर पडी और मुझ चोट भी आई। लाठी सहने का यह मेरा पहला अनुभव था।

फिरोज का नेहरु परिवार से सम्पर्क एक अनूठी कहानी है। इलाहाबाद की गर्मी मशहूर है लू के थपड़े, कड़ी धूपसे तपती, सड़कें और उखड़ा सारा माहौल। लेकिन सत्याग्रहियो को तो पैदल चलकर धरना देना होता था। उस दिन भी एक जुलूस आया था। इविंग क्रिस्चन कालेज के सामने धरना देने। जुलूस मे हर उम्र की लडके व महिलाए थी। तिरंगे हाथ म थे। जुलूस के आगे-आगे कुछ महिलाए चल रही थी उनमें से एक बहुत सुन्दर नाजुक सौम्य महिला थी-नाम कमला नेहरु। उसके साथ उसकी ननद कृष्णा हठीसिंह भी थी। भारत माता जिन्दाबाद वन्देमातरम् व 'महात्मा गांधी की जय' के साथ वह लडको का आह्वान कर रही थी कि वह अंग्रेजी छोड कर राष्ट्रीय आन्दोलन मे शामिल हो जावे। लेकिन कुछ शरारती लडके चार दीवारी पर बैठे महिलाओ का मजाक उडा रहे थे। नाजुक सी दिखने वाली कमला को गर्मी व थकान सहन न हुई। उन्होने माफी मांगने पर युवको ने उन औरतो की परेशानी का मजाक उडाया। थोडी ही देर बाद कमला मारे प्यास व परेशानी से बेहोश हो गई। कुछ क्षण बाद एक गोरा सा लडका इन लोगो की ओर बढा। उस लडके ने अपने साथियों की मदद से बेहोश कमला को उठा-कर घने पेड की छाया म लिटाया और पानी पिलाया और उन्हे घर तक छोड आए।

पुष्प नेहरु की सभा से रह गए व बच्चो की तरह फूट २ कर रोने लगे इन्दिरा जी पर मानो आकाश ही टूट पडा। सभी बिलख रहे थे और पास खडे फिरोज सोच रहे थे कि कौन किसको ढाढस बधाये? कुछ दिनो बाद इन्दिरा जी स्वदेश लौट आई और वह जब दूसरी बार विदेश आक्सफोर्ड मे अपनी शिक्षा पूरी करने गई तो द्वितीय विश्व युद्ध के बादल मडरा रहे थ। नेहरु जी ने लिखा था कि जीवन मे खतरे सभी जगह है यदि चाहती हो तो आ जाओ और मन स्वस्थ हो इन्दिरा ने अकेले ही चलने का निश्चय किया बाद मे साथ हो गया तो भारतीय युवको का—फिरोज गांधी और भूपेश गुप्त था।

उस समय का एक संस्मरण है जो इंदिरा जी के स्वभाव के एक बड़े पहलू की ओर संकेत करता है वह है स्पष्टवादिता। पानी के जहाज में चलते-२ ये लोग दक्षिण पहुंचे तो वहां पहले से ही भारतीय प्रवासी इनके स्वागत के लिए प्रस्तुत थे। लगा कि उनके पहुंचने से पहले ही समाचार पहुंच चुका था कि गांधी देश की ओर जवाहर की बेटा मिस इंदिरा नेहरु आ रही है। गांधी जी का कार्य क्षेत्र रहा हुआ दक्षिण अवश्य ही उनका स्वागत करता। मगर मिस नेहरु ने कहा "सभा में मैं चलूंगी नहीं फिरोज गांधी और भूपेश गुप्त के साथ अफ्रीका की वस्तुएँ देखती हुई इंदिरा सभा में पधारी प्रवासी भारतीयों ने हार्दिक स्वागत किया और गांधी व नेहरु के गुण गाए। इंदिरा जी को बहुत सम्मान मिला। अन्त में संयोजक ने कहा खेद है कि मिस नेहरु कुछ बोल नहीं पायगी।" इंदिरा जी को गुस्सा आ गया "मैं जरुर बोलूंगी।" यह सुनते ही सब प्रवासी भारतीय खिल उठे किन्तु इंदिरा जी के भाषण के प्रतिफल स्वरुप कोई भी भारतीय उन्हें विदा करने नहीं आया। उन्होंने एक बात कही "भारत अंग्रेजों के खिलाफ लड़कर आजादी चाहता है क्योंकि भारत भारतीयों का है। और अंग्रेजों को वहां शोषण का अधिकार नहीं इसी तरह अफ्रीका अफ्रीकियों का है उनका शोषण करने का अधिकार किसी को नहीं है यह आश्चर्य की बात है कि भारत वाले अंग्रेजों का विरोध कर रहे हैं और यहां पर प्रवासी भारतीय शोषण में अंग्रेजों का साथ दे रहे हैं।

फिरोज गांधी और इंदिरा जी का सम्पर्क किशोरावस्था से प्रारम्भ था जो दिन प्रति दिन प्रगाढ़ होता जा रहा था। जब नेहरु को इसकी खबर दी गई तो प्रियदर्शिनी इन्दु से उन्होंने कहा जल्दी में कोई निर्णय न करो। काफी समय तक विदेशों में रही हो। एक व्यक्ति तक पसन्द सीमित करने के पहले अच्छा रहे औरों को भी परख लो। वैसे अभी मुझे जेल से भी छूटने दो। और अपनी दोनों बुआओं से भी पूछ देखो। उनकी क्या राय है तुम्हारी पसन्द के बारे में।"

इन्दिरा जी के सामने एक विषम स्थिति आ गई। उनके विचार थे कि निर्णय तो ले लिया—फिर उसे क्रियान्वित करने में दूसरे की सलाह क्यों ली जावे और फिर यह तो व्यक्तिगत मामला था। फिर भी पापू ने जो कुछ कहा उसका पालन तो करना ही चाहिए। बड़ी भुआ विजय लक्ष्मी से बात चली तो उन्होंने अपने भाई के आंदोलन को ही दोहराया इस मामले में निर्णय सोच समझ कर ही लेना चाहिए।" इन्दिरा जी को निराशा हुई। छोटी भुआ बम्बई थी। इन्दिरा जी कृष्णा हठीसिंह की राय लेने पहुंची। उन्होंने पहला सवाल किया "तुम्हें यह राय किसने दी। उत्तर था "पापू ने कहा पूछ देखो।" 'और उन्हें यह खबर किसने दी कि तुमने फिरोज गांधी को स्वीकार कर लिया।" क्या मैंने खुद ही कहा था। कृष्णा जी चकित रह गये थे अपने विवाह की बात उन्होंने स्वयं बड़ी बहन के माफत जवाहर जी तक पहुंचाई थी यह लड़की स्वयं पिता से चर्चा कर बैठी। किन्तु वह भूल गई कि कमला जी की मृत्यु के पश्चात् नेहरु जी उसके पिता और मां दोनों थे। उत्तर मिला थोड़ा और ठहरो, जल्दी क्या है।' इन्दिरा जी का धैर्य सीमा पार कर गया। "आपने तो राजा साहिब से विवाह करने का फैसला हफ्ते भर में ले लिया था और मुझे सलाह दे रहे हो ठहरने की। मैं फिरोज गांधी को लम्बे अरसे से जानती हूं।"

वास्तव में वह फिरोज को लम्बे समय से जानती थी और उसकी निष्ठा पर मुग्ध थी। देश के बड़े-बड़े घराने के लोग जवाहर की बेटी को अपनी पुत्र-वधु बनाने को आतुर थे किन्तु इन्दिरा जी व्यक्तिगत मामले में धन और वैभव को नहीं आने देना चाहती थी। जिसके आदर्श पूंजीवाद और समाजवाद के विरुद्ध संघर्ष करने में ही पूरा परिवार ध्वस्त हो गया था, दादू चले गए थे, मम्मी छोड़ गई थी, पापू जेलों के निवासी हो गए थे और वैभव के लिए विख्यात आनन्द भवन का वैभव, कीमती एक-२ करके गायब हो गया था। जब वह बच्ची थी तभी से फिरोज

का पारिवारिक सम्बन्ध था। उनकी माँ के तो वह चहेते थे और उनकी सेवा सुश्रुषा भी खूब करते थे। 1941 मे जब जवाहर जी जेल मे थ तो इंदिरा जी ने बताया कि वह जब इंदिरा जी अपना निर्णय विवाह के सम्बन्ध मे कहलाया तो पंडित जी खुश नही हुए। उन्होने कहा "अभी पहले अपनी सेहत ठीक करो और यहाँ इत्मिनान से कुछ और लोगो को समझने की भी कोशिश करें। इंदिरा जी को गांधी जी से भी मिलने की सलाह दी। गांधी जी ने फिरोज को देखने की इच्छा व्यक्त की और देखने व बात करने के पश्चात् अपनी सहमति दे दी। जब यह बात देश में हिंदुओ को ज्ञात हुई तो एक हंगामा-सा मचा दिया गया। नेहरु परिवार की बेटी व एक पारसी से विवाह। फिरोज चाहते थे कि विवाह बहुत सादगी से हो। लेकिन गांधी जी का आदेश था कि विवाह बहुत नही किंतु थोडी धूमधाम से अवश्य कियाजावे और गांधी जी की आज्ञा फिरोज के लिए ईश्वर का वचन थी। वहा पहुचकर दम्पति ने पंडित जी को इलाहबाद तार दिया काश! हम आपको यहा से ठंडी हवाओ के झोके भेज पाते।" इंदिरा जी को आप बहुत पसंद थे। नेहरु जी ने चिढाने के लिए तार दिया "धन्यवाद। लेकिन तुम्हारे पास आम कहा हैं?

फिरोज से शादी करना चाहती है तो नेहरु जी उनके इस निश्चय मे इसलिए परेशान नही हो गए थे कि फिरोज पारसी थ और वह एक कश्मीरी ब्राह्मण बरन् उनकी परेशानी का मुख्य कारण था कि फिरोज और इंदिरा की पारिवारिक पृष्ठ भूमि म बहुत अंतर था। फिरोज एक मध्यम वर्गीय परिवार के युवक थे और इंदिरा धन-वैभव मे पली थी। एक स्वर पर और पश्चिमी से आकर पालन पोषण हुआ था। बुआ विजय लक्ष्मी ने परम्परा और संस्कृति की बातें बतलाकर उन्हे डराना भी चाहा किंतु वह नही मानो। जवाहर जी ने गांधी जी से परामर्श की सुखवंत सिंह ने अपनी पुस्तक 'इंदिरा गांधी बढते कदम' म लिखा हैं "फिरोज के प्रति उनके प्यार को सबसे बडी वजह यह थी कि

फिरोज में उनके माता-पिता के प्रति आदर का भाव था और उनके एक जैसे राजनैतिक विचार थे। "अतत 1942 मे बहुत साधारण में से दोनो का विवाह से सम्पन्न हुआ। अग्नि के सात फेरे लेने के बाद वह मधुमास मनाने के लिए कश्मीर गई। लौट कर इलाहाबाद आई पर वह बहुत कम समय ही शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकी और उनका एक गृहणी बने रहना असम्भव था। खुशवतसिंह के शब्दो मे 'वह उनका जन्म एक राजनैतिक परिवार मे हुआ, और विवाह एक राजनैतिक पति से। भारत छोडो आदोलन मे उनके समीप भाकर पूरा परिवार ही गिरफ्तार किया गया और पुलिस की मार ने उन्हे राजनीति का पहला पाठ पढाया।

"मेरे विवाह के तुरन्त बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का इलाहाबाद अधिवेशन हुआ। अधिवेशन के लिए पडाल बनाने की जिम्मेदारी मेरे पति पर थी। मुझे स्वय सेवको के साथ काम पर लगाया गया। हम दोनो बहुत सुबह अपनी जिम्मेदारियां निभाते निकल जाते थे और काफी रात तक एक दूसरे को देख नही पाते थे।" जीवन के कुछ पृष्ठ से

इस सम्बन्ध मे इन्दिरा जी स्वय कहती है " मैंने अपने छिपने की जगह से निकल कर भाषण शुरु किया कि बदूकें ताने सिपाही मेरी ओर बढ़े। एक सिपाही सगीन बन्दूक तान कर मेरी ओर बढा। उसकी सगीन मेरे जिस्म को छूने लगी थी। छज्जे पर खडे फिरोज यह देख रहे थे कि बेहद उत्तेजित हो उठे। भूल गए कि वह भूमिगत है वे सीधे मेरे पास आए। उस सिपाही से बोले "या तो बदूक हटाओ या भाग जाओ। हम सभी को गिरफ्तार कर लिया गया।" जीवन के कुछ पृष्ठ से।

इसके बाद इन्दिरा जी अपने नए घर रायबरेली आ गई पर उनको यह घर कितने दिन बाध सका सन् १९४२ का खूनी अगस्त आया। देश के बडे-बडे नेता बम्बई पहुचे। "करो या मरो" 'अंग्रेजो भारत छोडो' का नारा गूज उठा। सभी नेता गिरफ्तार कर अज्ञात स्थानो को भेज दिए

गए। इसके बाद इंदिरा जी इलाहाबाद आईं। गांधी जी व अपने पिता का संदेश जेल से प्राप्त हुआ और वह उसे देश की जनता में सभा में प्रसारित करने लगी। फिरोज दूर छत से सब कुछ देख रहे थे। एक अंग्रेज सैनिक ने गोली का निशाना इन पर साधते हुए आदेश दिया 'बोलना बन्द करो, मगर वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि एक कट्टावर युवक ने रायफल पर झपट्टा मारा बना क्या? वह युवक था फिरोज गांधी। पुलिस ने घेरा डाल दिया और फिरोज व इंदिरा गांधी को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें 13 माह की कैद हुई। जेल में उनसे क्लास सी के एक साधारण कैदी जैसा व्यवहार किया गया। "बीमार होने पर तब उन्हें गुर्दे और फेफड़े की शिकायत थी जेलरों को उनके प्रति अन्याय और अपेक्षा के भाव थे। उनके लिए भेजे गए आम वह खुद खा जाते थे, भी उन्हें कटु नहीं लगा। उन्होंने संकट का सामना पूरी तरह किया।"

वह सदैव चर्चा का विषय रही और चर्चा उनके वैवाहिक सम्बन्धों को लेकर भी होता रहता था कि वह मधुर न थे। 'मनोरमा' मासिकी की एक सुगम पत्रिका करें है। उसके द्वारा उनकी पर्सनल स्टाफ में रही एक स्त्री बिम्मा से साक्षात्कार इसे सम्बन्ध में लिया गया। मनोरमा के अनुसार "बिम्मी जी के नाम लिखे गए इंदिरा जी के पत्रों को पुलिस पढ़ने व एलबमों के सहजे अनेक चित्रों को देखने व बिम्मी जी से बातचीत करने पर कहीं भी ऐसा नहीं लगा। कि इंदिरा जी के नारी मन की सहज स्वभाविकता या कोमल भावुकता उन पति पत्नी के सम्बन्धों के बीच न रही है वे पत्र विशेष महत्वपूर्ण थे। एक जब फिरोज अस्वस्थ थे और एक जब फिरोज ना रहे और पिता ने उन्हें मन-बहलाव के लिए मंत्री आमन्त्रण पर विदेश भेजा था। इन पत्रों से प्रकट है कि फिरोज गांधी व इंदिरा जी का दाम्पत्य जीवन अत्यधिक मधुर व सुखद था।"

पारिवारिक जीवन में इन्दिरा जी ने अपनी गृहणी की भूमिका आदर्शनारी के रूप में निभाई। इन्होंने अपने प्रथम पुत्र राजीव को प्राप्ति सन् 1944 में हुई व द्वितीय पुत्र संजय सन् 1946 में पैदा हुआ। 1947 में जब देश स्वतन्त्र हुआ और नेहरू जी भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री बने। इन्दिरा जी को अकेली सन्तान होने के कारण पत्नी के साथ-२ पुत्री का कर्तव्य भी पालन करना पड़ा। इन्दिरा जी सपरिवार देहली आ गई। उनके पति एक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक हस्ती बन गए और संसद में चुने गए। गुणवंतसिंह के अनुसार "अब दोनों के जीवन ने अलग-२ रास्ता पकड़ा फिरोज ने एक अलग मकान ले लिया और इन्दिरा प्रधानमन्त्री भवन में आकर अपने पिता की निजी सहायक, सेक्रेटरी, नर्स व गृह परिचारिका बन गई।" उनका काफी समय तो पिता की देख-रेख में लग जाता और बाकी समय अपने दोनों बेटों की देखभाल में।" उसी बीच चर्चा यहां चली गई कि दोनों में मन-मुटाव हो गया किन्तु कहीं भी इस प्रकार का कोई प्रमाण लेखिका को नहीं मिला। अलग-२ फिरोज के स्वभाव के विषय में जानना इस परिप्रेक्ष में उचित रहेगा, स्वाभिमान उनमें कूट-२ कर भरा था। उन्होंने अपने घर वालों से सख्त ताकीद कर रखी थी कि प्रधानमन्त्री की रिश्तेदारी का प्रभाव दिखाकर कभी कोई लाभ न उठाये। स्वाभिमानी फिरोज को तीनमूर्ति में घर जवाई बनकर रहना बहुत खलता था। वह गरीबों के हमदर्द थे लेकिन प्रधानमन्त्री निवास की सुरक्षा व्यवस्था के कड़े नियमों के कारण फिरोज को बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता था। फिरोज गांधी को प्रधानमन्त्री नेहरू के साथ फोटो खिंचवाना या उनके दामाद के रूप में पीछे-२ लगना कतई पसन्द नहीं था। वे हमेशा उन्हीं समारोहों में भाग लेते थे। जहां अपनी निज की हैसियत से जा सकते थे।"(पुष्पा भारती द्वारा लिखते फिरोज, एक कहानी भूलसी ' धर्म युग गणतन्त्र विशेषांक 1985)

... रहने का कारण मेरी दृष्टि में पुरुषोचित स्वाभीमान हो रहा होगा। किन्तु अलग-२ रहकर भी दम्पती अपने दाम्पत्य जीवन में बिखरे

नही थे। मैं फिर उसी बिम्मी को उद्धारित करूगी जिसने मनोरमा को अपनी साक्षात्कार देते हुए कहा "इंदिरा व फिरोज सिनेमा बहुत देखते थे। खूब दावतें होती, पिकनीक मनाई जाती। साथ में यूनुस व गेम साहब भी रहते। मुझे याद है फरीदाबाद म गया-२ होटल होलीडे-इन खुला था। फिरोज सबको लेकर वहां गए थे। शेरो-शायरी का बडा शौक था। वे बड मस्त स्वभाव के थे। सबसे खुलकर हसते बोलते। खुश मिजाज बहुत थे वहीं इंदिरा चुपचाप रहा करती थी। बहुत सकोची व शर्मिली स्वभाव की थी। सभी लाग इंदिरा जी को देखकर यह यकीन नही कर पायेंगे कि वह उस समय अपने परिवार व घर की देखभाल साधारण गृहणि के सामान ही करती थी। उन्हे परिवार व घर की देखभाल से बेहद लगाव था। भोजन बनाने की पुस्तको व गृह-गृहस्थी से सम्बंधित पत्रिकाएँ जैसे (Women Home) मगवाती व पढ़ती। बिम्मी जी आगे कहती है वह फिरोज ही थे जिनकी प्रेरणा से सकोची, शर्मिली इन्दिरा घर परिवार के स्नेह बन्धन के बाहर विश्व-बन्धुत्व तक विस्तार पा सकती वह खुद कहती कि फिरोज न चाहते तो मैं सक्रिय राजनीति म कभी न होती।" बिम्मी को अपने जन्म दिन पर भेजे गए शुभकामना स देश को लिए धन्यवाद देते हुए इंदिरा जी लिखती है ' मुझे सबका प्यार मिला मगर मैंने दिन बडी बचैनी से व्यतीत किया। फिरोज अस्वस्थ हैं और वह अपने लिए कुछ भी करने को मना कर देते है। मै उनके लिए बहद चिंतित हू मै नही जानती कि मुझे क्या करना चाहिए। बहुत दुबले हो गए है वो। 1952 म इन्दिरा जी पडित जी Offical Hostess नियुक्त हुई। उन्ह राष्ट्री म सरकारी भोज आदि पर भी निमत्रण होता। 1952 की चुनाव की तयारियां चल रही थी। नेहरु जी फूलपुर से और फिरोज रायबरेली से चुनाव लड रहे थे। लखनऊ पहुच दोनो ही पति-पत्नी चुनाव की तयारियो म लग गए। इंदिरा जी कभी फूलपुर तो कभी रायबरेली बीच-२ म लखनऊ भी आती रहती जहा बिम्मी जी दोनो बच्चो के साथ रहती थी। उनके दाम्पत्य जीवन के सम्बन्ध मे

आपको देखता हूं" सभी कुछ हंसी मजाक के वातावरण में चल रहा था। अचानक चाय का प्याला हाथ में लिए हुए ही फिरोज लुढ़क पड़े और लाख प्रयत्नों के पश्चात भी उन्हें फिर होश में न लाया जा सका।

इंदिरा जी पर यह एक भयानक आघात था। कितने ही ऊंचे से ऊंचे पद पर भारतीय नारी आसीन हो किन्तु पति-विहीन जीवन ही एक हिंदू नारी के लिए अभिशाप है। विम्मी जी भी कहती हैं "फिरोज़ के जाने के बाद वह बहुत विकल हो उठीं। बहुत अव्यवस्थित हो उठी थीं भीतर ही भीतर। अचानक बोलीं विमला मैं देहरादून जाऊंगी। मैंने पूछा यहां कहां जाना है तो बोलीं मुझे वहां रामकृष्ण आश्रम जाना है। पण्डितजी ने मुझे इशारे से कहा जाने दो रोकना नहीं मैं उन्हें साथ लेकर देहरादून गई। बच्चे वहां उन दिनों दून स्कूल में पढ़ रहे थे। शनिवार रविवार की बात थी। राजीव संजय को लेकर मां के पास आए। जिस जिस तरह बच्चों ने उन्हें मना लिया। हम उन्हें साथ लेकर पहाड़ों के बीच गेस्ट हाऊस में रहने के लिए चले आए। उन दिनों न्यूयोर्क से किसी से निमंत्रण मिला। कुछ दिनों मन-बहलाव के लिए वहां गईं थी पर उस घर में वहां मन नहीं लगा। वहां से लिखा "मुझे बड़ा अजीब सा लगता है जब भी अकेली होती हूँ। मन का बांध आंसुओं में फूट पड़ना चाहता है। मैं वापस आना चाहती हूं।"

यह सब उद्धरण इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि इन्दिरा जी पत्नी के रूप में भी अपनी भूमिका भली प्रकार निभा पाईं। चर्चा यह भी होती है कि दाम्पत्य सुख उन्होंने नहीं पाया किन्तु परिस्थितियों का सामना करते हुए, दोहरी भूमिका (पत्नी व बेटी की) निभाते हुए भी वह थोड़ा समय ही सही, दाम्पत्य सुख पा सकीं। विवाह के पश्चात् के वर्षों में, दो पुत्र होने पर उनके लालन पालन में, "पिता के घर की परिचारिका बन कर वह पतिविहीन होने के पश्चात भी यही हिम्मत

व निर्भीकता से कांग्रेस-अध्यक्ष की भूमिका भली प्रकार निभा पाई, यह असाधारण प्रतिभा का द्योतक है। इन्दिरा जी ने काफी बाद में एक इंटरव्यू में कहा था 'मैंने सुना है कि इस प्रकार की खबरें फैल रही है कि हमारा विवाह असफल हो गया है या टूट रहा है। मैंने अपने पति को छोड़ दिया है या हम लोग अलग हो रहे हैं। लेकिन यह सब नहीं हैं हम लोग बहुत सुखी रहे हैं हमारे समय समय पर आपस मे झगड़े भी हुए है कभी कभी परिस्थितिवश कभी कभी यू ही। वे झगड़े अधिक रहे है। वास्तव मे हम दोनो का मिजाज बहुत गर्म था। अगर मेरे पति ने मना किया होता तो मैं सामाजिक जीवन मे कभी नहीं आती। वह चाहते थे कि मैं कुछ करूं। मेरे सामाजिक जीवन पर उतरने पर मुझे सफलता मिली। दूसरे लोग, मित्र, रिश्तेदारो ने यहा तक कह डाला कि इन्दिरा के पति ऐसे हैं, वैसे हैं, पता नही ऐसा पति पाकर वह कैसा महसूस करती होगी। इन बातों से वह बहुत परेशान हो जाते थे और उन्हें सामना करने में मुझे हपतो लग जाते थे। पुरुष के अहं को चोट पहुचाना सबसे बडा अपराध है। हम दोनो इन चीजो से अलग अलग रहकर एक दूसरे के नजदीक आने का प्रयत्न करते थे।

लेकिन इन सब वक्तव्यो से अलग हटकर देखा जाय तो यह बात सच थी कि फिरोज में कुछ हीन भावना पैदा हो गई थी। इंगलैण्ड मे उनकी शिक्षा का भार उनकी एक आंटी ने उठाया था जो लखनऊ मे डाक्टर थी। वह फिरोज को बहुत प्यार करती थी। दूसरे उन्हें अपने ससुर प्रधानमन्त्री श्री नेहरू के घर बड़े सुरक्षा प्रबंधों के बीच रहना अखरता था। लोकसभा का सदस्य होने के नाते उन्हें एक घर भी मिल गया था। इस घर को उन्होंने खूबसूरत फर्नीचर से सजाया और वहा बढ़िया बगीचा बनाया। १९५८ से वह अकेले रहते थे किंतु उनमे कोई बड़ी महत्वकांक्षा नहीं थी। फिरोज द्वारा अलग मकान लेने के कारण उनके

बीच झगड़े हुए। यहां तक कि संसद मे भी इस प्रकार की अफवाह उडी कि हिन्दू विवाह कानून मे तलाक की सुविधा इन्दिरा फिरोज में तलाक की संभावना को देखते हुए की गई है। इन्ही दिनों मे उनके विवाह के बारे में काफी कुछ कहा व सुना जाने लगा।

फिरोज बच्चो से बहुत लगाव रखते थे और उनके लिए आनंद के वही क्षण होते थे जब वह बच्चो के साथ होते थे। इसलिए खाना वह इन्दिरा व बच्चो के साथ प्रधानमन्त्री निवास पर ही खाते रहे। Dam Moraes ने अपनी पुस्तक Mrs Gandhi मे इन्दिरा जी के विवाह का एक राजनैतिक आवश्यकता के रूप में चित्रण किया है और उन्होने यह वर्णन भी किया है कि इन्दिरा जी ने अपने व्यक्तिगत जीवन को कैसे अपने पिता के प्रधानमन्त्रीत्व के कर्तव्यो के पालनार्थ सहायता देने के उद्देश्य से बलिदान किया। १९७७ मे लेखको से हुई वार्ता में इन्दिरा जी ने स्वीकार किया 'मुझे यह करना पडता था क्योकि मेरे पिता मेरे पति से अधिक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे थे।

मेरे विचार से यदि इन्दिरा व फिरोज के दाम्पत्य जीवन में कुछ कड़वाहट थी तो उसका कारण फिरोज का पुरुषोचित अहं भाव और इन्दिरा जी का अधिकतर अपने पिता के साथ रहना ही हो सकता है। किन्तु इस समस्या की गहराई मे जाने से पूर्व हमें फिरोज गांधी के स्वभाव के विषय मे जानना भी आवश्यक है। श्री डाम मोरिस ने अपनी पुस्तक Mrs Gandhi में फिरोज के प्रारम्भिक जीवन का जो चित्रण किया है उससे उसके ही शब्दो मे उनकी यह तस्वीर उभर कर आती है। "He was a bright boy, skilful with his hands and interested around him, tohugh he was possessed of a somewhat perverse some of though" लेखक के अनुसार फिरोज का प्रधान आकर्षण

कमलाजी थी और इन्दिरा जी भी उनके समीप केवल इसीलिए आई क्योंकि फिरोज कमलाजी को बड़ा स्नेह व आदर देते थे। किन्तु कमलाजी ने इन्दिरा व फिरोज के सम्भवत विवाह पर उल्टी प्रतिक्रिया दी।

कुछ भी रहा हो किन्तु यह बात तो प्रकट है कि इन्दिरा जी का दाम्पत्य (१९४२ से १९६०) सम्बन्ध अन्य स्त्रियों से थोड़ा भिन्न था। उत्तरप्रदेश में अंग्रेजी में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए १९३७ में नेशनल हेरॉल्ड की स्थापना की थी पर सन १९४१ में सैंसर शिप के विरोध में इसे बन्द कर दिया गया था। १९४६ में इसका पुनः प्रकाशन प्रारम्भ हुआ और फिरोज इसके प्रबन्ध सम्पादक बन कर लखनऊ चले आए और परिश्रम करके नेशनल हेरॉल्ड को पुनः जीवित किया। 'धनपति राय ने एक स्थान पर लिखा है "फिरोज कभी कभी तो पूरे दो दिन और पूरी दो रात प्रेस में काम करते रहते है।" दिसम्बर १९४६-में संजय के जन्म के पश्चात् भी इन्दिरा जी व फिरोज की गृहस्थी मजे मे चल रही थी लेकिन स्वतन्त्रता के पश्चात् व नेहरू जब प्रधानमन्त्री बने, घर का प्रबन्ध सम्भालने के लिए इन्दिरा जी को देहली बार बार जाना पड़ता था। कभी कभी देहली से वापिस लखनऊ आने के तीन चार दिन के अन्दर ही तार आता "विशिष्ट व्यक्ति आ रहे है, आ जाओ।' स्वाभाविक है फिरोज को अपनी पत्नी का इतना अधिक मायके जाना सुहाता नही था पर वह जानते थे कि इसके अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है।

लेकिन १९५० में जब नेहरू जी अपना १७ यॉर्क रोड वाला घर छोड़कर तीन मूर्ति भवन रहने लगे और इन्दिराजी अपने पिता का घर सम्हालने गई तो फिरोज ने तय कर लिया कि रोज रोज दिल्ली और लखनऊ का आना जाना न दो बच्चों के लिए न इन्दिराजी के लिए ठीक है। इन्दिराजी को स्थायी रूप से तीन मूर्ति भवन मे रहने की इन्होंने सलाह दी। वास्तव में यदि फिरोज के

स्थान पर और कोई पुरुष होता तो शायद उसे प्रधानमन्त्री से इस प्रकार से सम्बन्धित होने का गर्व होता किन्तु फिरोज में यह भाव चरम सीमा पर था और वह घर जमाई जैसी स्थिति को मानने तैयार नहीं थे। उन्होंने एक बार मजाक में किसी से कहा भी था "मैं अपने अगले जीवन में एक अमरूदवाली से विवाह करना पसन्द करूंगा क्योंकि जब मैं शाम को घर लौटूंगा तो वह मेरी सेवा करने को तैयार मिलेगी।" (जनार्दन ठाकुर All the PM's Men)

फिरोज अपने दोनों बेटे को बहुत प्यार करते थे। फिरोज को सबसे अधिक चहकता हुआ बच्चों के साथ ही देखा जाता था। वे राजीव संजय को इंजीनियर बनाना चाहते थे। स्वाभिमानी फिरोज को तीन मूर्ति में घरजमाई बन कर रहना बहुत अखरता था। पुरुषोचित अहम् भाव ही शायद दम्पति के मध्य कुछ कड़वाहट लाया होगा ऐसी मेरा मन धारणा है। वे संसद सदस्य बनने के पश्चात् भी देहली आने पर अलग ही घर ले रहने लगे। उन्हें प्रधानमन्त्री नेहरू के साथ फोटो खिचाना या उनके दामाद के रूप में पीछे पीछे लगना कतई पसन्द नहीं था। वे हमेशा उन्हीं समारोहों में भाग लेते थे जहां अपनी निजी हैसियत से जा सकते थे। उनके अलग रहने पर लोगों में कानाफूसियाँ भी होने लगी। वास्तविकता क्या थी यह तो अब केवल अंदाज ही लगाया जा सकता है किन्तु इतना अवश्य है कि उनके नजदीकी परिचित केवल इतना ही जानते हैं कि दम्पति के मध्य हल्की सी दरार अवश्य पड़ गई थी किन्तु बच्चों का बन्धन और पारस्परिक स्नेह व प्रेम का अभाव नहीं हुआ था। फिरोज स्वतन्त्र विचारों के थे और संसद में उन्होंने अपने वक्तव्यों से भूचाल सा उठा दिया था। फिरोज की निडरता, स्पष्टवादिता और सत्य के प्रति उनके हठीले आग्रह के सामने बड़े बड़े व्यक्तित्व बौने लगने लगे थे। उनके जैसा साहसी सांसद और

कोई नहीं था जिन्होंने अपने ससुर श्री नेहरू को भी संसद में कई बार निरुत्तर कर दिया था। १९५८ में उनको अकस्मात् दिल का दौरा हुआ। इंदिरा जी एक सरकारी मिशन साथ नेपाल गई हुई थी। खबर पाकर तुरन्त लौटी और पति की अथक सेवा सुश्रुषा में लग गई। दोनों बच्चों के साथ अगस्त में कश्मीर आराम करने भी गए किन्तु होनी को कौन टाल सकता है। २ सितम्बर १९६० को उनको द्वितीय दौरा हुआ और ८ सितम्बर को इंदिरा का हाथ थामे सदा के लिए चल बसे। इन्दिरा जी एकदम टूट सी गईं। उन्होंने शोक से पीड़ित हो स्वयं को एक कमरे में बन्द कर लिया। उनकी गृह-परिचारिका का कथन है कि उन दिनों वह अधिकतर रामकृष्ण मिशन में जाने की बात करती थी। श्री नेहरू भी अपनी एकमात्र सन्तान के दुख में एकदम पत्थर से हो गए और वज्र जो उन पर टूट पड़ा था उससे वह स्तंभ से रह गए। उनकी बहिन कृष्णा ने जब उनके कंधे पर हाथ रखा तो वह बिखर पड़े सब कुछ कितनी जल्दी और अचानक ही हो गया। अभी तो बिल्कुल बच्चा ही था। और यह तो मुझे आज ही मालूम हुआ कि कितना ज्यादा लोकप्रिय था वह।

समय स्वयं ही मरहम का काम करता है। कितना ही भयंकर घाव हो समय के साथ भर जाता है, इन्दिरा जी ने स्वयं ही हिम्मत ली और अपने बच्चों को योग्य बनाने अपने पिता के साथ विदेश जाने और राजनैतिक जीवन मे प्रवेश करके अपने दुख को भुलाने का प्रयत्न किया। मेरे विचार से तो परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए इतना थोड़े समय का दाम्पत्य सुख इन्दिरा जी प्राप्त कर सकी थी वह भी अपने आप में पूर्ण था। सोचती हूं कि नारी जीवन की एक मुख्य भूमिका (पत्नी की भूमिका) वह बहुत सुन्दर और सहज ढंग से निभा गईं। कुछ ऊंच नीच तो प्रत्येक नारी के जीवन मे होना है। सब कुछ होते हुए भी १९४० से १९६० के २० वर्षीय जीवन में एक प्रबुद्ध व बुद्धिजीवी पत्नी की भूमिका

निभाने में उनमें किसी भी प्रकार की कमी दृष्टिगत नहीं होती है। अपने पति की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने वही अनुभव किया जो एक साधारण हिन्दू स्त्री करती है। उन्होंने जो कुछ उस समय अपने कागजों मेंनोट किया वह स्मरण योग्य है "मैं नहीं समझ पाती कि मैं क्या करूं। मैं पूरी तरह अकेली और दुखी महसूस कर रही हूं। आप जानते हैं कि फिरोज और मैं कैसे असहमत थे और कई बरस से झगड़ रहे थे तब भी अलग होने के बजाय या मैत्री सम्बन्ध कमजोर पड़ने की बजाय हम पहले के मुकाबले एक दूसरे के अधिक करीब थे। मैं बिल्कुल खोयी, खाली और मरी हुई महसूस कर रही हूं।"

मां के रूप में

ममतामयी माँ के रूप में इन्दिरा गांधी ने दोहरी भूमिका निभाई। उन्हें अपने दोनों बच्चों के लिए माता व पिता दोनों का कर्त्तव्य निभाना पड़ा क्योंकि जब उनके दोनों पुत्र छोटे छोटे थे तभी उनके पिता का स्वर्गवास हो गया था। इन दोनों पुत्रों के कारण वह राजनीति में भी Active भूमिका प्रारम्भिक दिनों में नहीं निभा पाई क्योंकि उनके बच्चों के लालन-पालन व अपने पिता की देख रेख में ही उन्होंने अपना पूरा समय तीन मूर्ति भवन में बिताना प्रारम्भ किया था।

अपनी मां बनने की लालसा के सम्बन्ध में वह स्वयं कहती हैं। विवाह करने के मेरे निश्चय के पीछे कई कारण थे। इनमें से मां बनने की लालसा भी एक कारण थी। मैं माँ बनने की इच्छा सजोए थी पर डाक्टर का कहना था कि शायद मैं मातृत्व का बोझ न संभाल पाऊं। वह मेरे स्वास्थ्य के लिए घातक होगा। मेरी जान को भी खतरा हो सकता था। इन सब बातों से मैं बहुत परेशान थी। इसलिए जब मैं गर्भवती हुई तो कई चिंताएं थी, आशंकाएं थी। इलाहाबाद में डाक्टर ने मेरा केस लेने से इन्कार कर दिया था इसलिए कि वह मेरी दोस्त भी थी। इस

कारण मैं बम्बई में अपनी बुआ के पास जाकर ठहरी। बम्बई में राजीव का जन्म हुआ। वह एक स्वस्थ माँ का स्वस्थ बच्चा था। मुझे न तो प्रसव वेदना हुई और न ही कोई दूसरी तकलीफ।

इस प्रकार सन् १९४४ में इन्दिरा जी की माँ बनने की लालसा पूरी हुई। बेटे का नाम रखा गया राजीवरत्न, जो उनके माता पिता दोनों के नाम का मेल था। उन दिनों के सम्बन्ध में इन्दिरा जी का स्वयं का कथन है "मुझे लगता है कि वे दिन मेरी जिन्दगी के बेहद हंसी खुशी के दिनों में से थे। बावजूद इसके राजीव में मुझे कोई खूबसूरती नजर नहीं आती थी। टैगोर ने लिखा है हर शिशु यह संदेश लेकर आता है कि मनुष्य पर से ईश्वर का विश्वास नहीं उठा है। किसी भी स्त्री के लिए मातृत्व जीवन की सबसे बड़ी पूर्णता है। नए प्राणी को संसार में लाना उसकी महानता का स्वप्न देखना सारे अनुभवों में सबसे अधिक आन्दोलन करने वाला होता है। वह आश्चर्य और आनन्द से मन को भर देता है।

अपने पिता जवाहरलाल नेहरू ने सर्वप्रथम अपने दोहते के जन्म का समाचार सुना तो प्रसन्न होना तो स्वाभाविक था किंतु वह उस समय जेल में थे। बच्चे को देखने की इच्छा भी पूर्ण नहीं कर सकते थे। उस समय के एक संस्मरण का इन्दिरा जी वर्णन इस प्रकार करती हैं "मुझे याद है एक दिन पुलिस मेरे पिता और गोविंदवल्लभ पंत को अहमद नगर जेल से बरेली ले गई। वे इलाहाबाद की नैनी जेल में एक रात के लिए ठहरे थे और उस बारे में मुझे एक संदेश भी मिला था। पर हमें यह पता नहीं था कि मेरे पिता नैनी जेल लाये जावेंगे या केवल ट्रेन ही बदली जावेगी। जब हमें इस बात की पक्की जानकारी हो गई तो मैं फिरोज बच्चे को लेकर उन्हें दिखाने ले गए। हम जेल गए। बाहर प्रतीक्षा करते रहे। मेरे पिताजी व पंतजी काफी रात गए वहां पहुंचे। सड़क पर बहुत कम रोशनी थी। उसी के मंदिम प्रकाश में मैंने बच्चे को

ऊपर उठाया। मेरे पिता ने उसे गौर से देखा अपने बच्चों की अपेक्षा उनके बच्चो, नाती-पोते को खिलाते मे ज्यादा आनन्द आता है कारण उनके प्रति जिम्मेदारी की वही भावना नहीं होती।" १९४६ मे उन्हें द्वितीय पुत्र की प्राप्ति हुई। उन्होंने अपने बच्चो के लालन-पालन मे अपना सम्पूर्ण समय लगाने का प्रयत्न किया। फिरोज को भी बच्चो से बहुत स्नेह था। स्वय इंदिरा जी के शब्दो मे "राजनैतिक सघर्ष के कारण मेरा अपना बचपन असामान्य एकाकीपन और असुरक्षा की भावना से भरा हुआ था। इसलिए मैं अपने बच्चों के लालन पालन के लिए पूरा समय देना चाहती थी। किसी पौधे के लिए जरूरी धूप और पानी की तरह ही बच्चे के लिए उसकी मा का प्यार और देखभाल भी जरूरी होती है। किसी भी मा को अपने बच्चा को प्राथमिकता देनी चाहिए क्योकि वे उसी पर विशेष रूप से अवलम्बित होते है। मेरी जीवन की सबसे बडी समस्या यह थी कि अपने सार्वजनिक जीवन की जिम्मेदारी और अपने घर की, अपने बच्चो की जिम्मेदारी के बीच कैसे तालमेल बिठाऊ।"

बच्चो की देखभाल वह स्वय करना चाहती थी। द्वितीय पुत्र के जन्म से पूर्व, अन्य सामान्य स्त्रियो के समान ही एक पुत्र के पश्चात् एक दकी लालसा उनके मन मे थी। उनका कहना है "मुझे बेटी होने की उम्मीद थी। सच्चाई तो यह है कि हमने लडकियो के ढेर तयक नाम रखे। इसलिए मेरे दूसरे बेटे का नाम काफी जल्दबाजी मे तय किया गया। दोनो बच्चो को वह आपके सुपुर्द करना बिल्कुल नापसन्द करती थी। वह स्वय ही उनका सारा काम करना चाहती थी "जब राजीव और सजय बच्चे थे तो मैं नहीं चाहती थी कि कोई और उनकी देखभाल करे। यह विचार ही मुझे नापसन्द था और इसलिए मैं उनको सारा काम करने की

कोशिश करती थी। बाद में जब वे स्कूल जाने लगे तो मैं कोशिश किया करती थी कि उनके स्कूल के समय के दौरान ही अपने सारे सार्वजनिक काम निपटाऊ ताकि जब बच्चे स्कूल से लौटे तो उनके लिए खाली रह सकूँ।" जैसा प्रकृति का नियम ही है कि एक बच्चा दूसरे से भिन्न होता है। वैसे ही इंदिरा जी के पुत्रों म स्वभाव की रुचि व की भिन्नताएँ थी। जिसका अनुभव स्वय इन्दिरा जी ने तो किया है अन्य उनके साथियो ने भी किया। अमिताभ बच्चन उन दिनो का स्मरण करते हुए लिखते है (धमयुग २३ से २६ दिसम्बर १६८४) "राजीव को इस तरह के कामो का बहुत शौक था जिसमें अपने हाथ से कुछ काम करना होता था। कुछ दिमाग लगता था कुछ मेहनत लगती थी राजीव की अपेक्षा संजय अधिक फिजीकल था। उसे बक्सर बूद ज्यादा पसन्द आती थी। फाइट भी बहुत था। राजीव गम्भीर और रिजर्व थे। वह आगे लिखते है राजीव को मेकेनिकल सेन्स अपने पिता से विरासत मे मिला है। पिता के स्वभाव का प्रभाव उन पर अधिक है। एक दिन हम दोनो फिरोज अकल के घर गए थे। नया तरीके से सजाया हुआ उनका कमरा था। हर चीज बेहद साफ और चारों ओर से टपकता हुआ विशिष्ट अभिजात्य। अगर आज आप राजीव का कमरा देखें तो पाये गे कि वहाँ भी ठीक वैसा ही माहौल है।"

इस प्रकार दोनों विभिन्न स्वभाव के बच्चो की देखभाल, दूसरे मकान मे रहने वाले पति का भी भोजन व नाश्तो का प्रब ध करना, तीन मूर्ति भवन की सम्पूर्ण व्यवस्था करना मैं सोचती हू इंदिरा जी के वह दिन भी व्यस्तता भरे रहे होगे। कि तु फिर भी वह अपनी मुख्य भूमिका माँ की भूमिका निभाने मे ही अपने मुख्य समय व ध्यान देती रही वह स्वय कहती थी ' बच्चा के साथ आप कितना समय बिताते है यह उतना मायने नही रखता जितना कि वह समय आप किस स्तर से बिताते हैं। जब किसी के पास सीमित समय होता है तो वह उसका ज्यादा से ज्यादा उप-

योग करने की कोशिश करता है । मैंने भी चाहे कितनी ही व्यस्तता क्यों न हो या थकी ,या बिमार ही क्यों न रही हो हमेशा अपने बच्चों के साथ खेलने या उनके साथ किताबें पढ़ने का समय निकाल ही लिया है ।"

बच्चा पर से पिता का साया १९६० में उठ गया जब कि राजीव १६ वर्ष के व सजय १४ वष के रहे होंगे किन्तु- इन्दिरा जी ने अपने पिता के समान ही पत्रों द्वारा निरन्तर सम्पर्क रखा । इंदिरा जी लिखती है "धीरे धीरे दो बच्चे बड़े हो गए और उनको बोर्डिंग स्कूल भेजा गया। जब वे बोर्डिंग स्कूल में होते तो मैं देश का ज्यादा से ज्यादा दौरा करती ताकि छुट्टियों में उनके साथ पूरा समय बिता सकूं । मैं अक्सर चिट्ठियां लिखती रहती ताकि उनको मालूम हो कि मैं उनका कितना ध्यान रखती हूं उनके बारे में क्या विचार रखती हूं ।

बच्चों के अनुशासन के प्रति भी वह सजग थी । उनका कथन है "शिक्षा का असली अर्थ है मानसिक और शरीर का प्रशिक्षण ताकि हम ऐसे सतुलित व्यक्तित्व का निर्माण कर सकें । यह बात केवल स्कूल और किताबी ज्ञान से ही हासिल नहीं की जा सकती । इसका ज्यादातर भार मा पर ही पड़ता है । मां को बच्चे मे अनुशासन की भावना का विकास करने और उसके चरित्र को मजबूत करने में मदद करनी ही चाहिए । बच्चे की हर सनक को पूरा करना उनके प्रति सच्चा प्रेम नहीं है। सच्चा प्रेम बच्चो मे अनुशासन पैदा करना है ।"

अपने सावजनिक कामों के सिलसिले मे इन्दिरा जी को बाहर विदेश भी जाना पड़ा किन्तु उनका कथन है कि बच्चों को कभी उनसे शिकायत नहीं रही है वह कहती है । उन्होने मेरा विदेश या घर से बाहर उनसे अलग जाना उपयोगी समझा क्योंकि उसके जरिये मैं भारत के सारे बच्चो के लिए बेहतर भविष्य के काम में अपनी बनाने भूमिका अदा कर रही थी ।

"यदि हालात खतरनाक हैं तब तो बजाय यहां अकेले बैठे रहने के मुझे वहां पहुंचना चाहिए।" मैंने समान बांधा और रवाना हो गई। साथ में दो बोरी आलू भी ले लिए। शाहदरा और देहली के बीच गाड़ी रुक गई। झांका तो देखा लोग किसी का पीछा कर रहे थे। मैं तुरन्त गाड़ी से उतर पड़ी और स्थिति पर नियन्त्रण किया। मैं एक व्यक्ति को तो बचाने पर सफल हो गई।" अस्वस्थ होते हुए भी और दो छोटे बच्चों का साथ होते हुए भी इस प्रकार का आचरण करना उनके उसी स्वभाव का दिग्दर्शन कराता है जिसका प्रारम्भ में जो जिक्र हो चुका है, वह हैं उनके व्यक्तित्व का एक अनूठा अंग, उनकी निर्भीकता।

८ सितम्बर १९६० को जब उनके पिता की मृत्यु हुई, तो राजीव १६ वर्ष के और संजय १४ वर्ष के थे। नाना की मृत्यु भी २७ मई १९६४ को हो गई। अब बच्चे केवल अपनी मां के सम्पर्क में ही रहे। दून स्कूल व अन्य विश्वविद्यालयों में अपनी शिक्षा पूरी करके राजीव तो अपनी इच्छानुसार PILOT बन गया किन्तु संजय प्रारम्भ से ही चंचल प्रकृति के थे। श्री नेहरू के लिए भी और इन्दिरा जी के लिए भी स्वाभाविकतया यह बहुत दुःख का विषय था कि वह दोनों जो आशाएँ संजय से लगाए बैठे थे उनके अनुकूल उसका आचरण नहीं था। कई अमीरजादो व बड़े V I P व्यक्तियों के बच्चे मिलकर देहली में मौज मस्ती उड़ाया करते थे उन्हीं में से संजय भी एक था।

संजय ने भी एक सिख लड़की मेनका आनन्द को पसन्द कर लिया था और उसके साथ अक्सर देखा जाने लगा था। मेनका के पिता सेना में थे। उन्होंने जब यह देखा व सुना तो इन्दिरा जी पर दबाव डाला कि संजय व मेनका का विवाह हो। उनके विवाह में परिवार के एक मित्र युनुस ने मुख्य भूमिका निबाही और अन्तत इन्दिरा जी के मां की भूमिका में थोड़ासा परिवर्तन हुआ और वह सास बन गई। भारतीय नारी जब सास बन जाती है तो शायद उसका वह अनुकूल था जाता है

अपनी अन्तिम परिणिति मे
न तो हम मां, न पिता न पति
न पत्नी, न सन्तान ।
हम सबका है एक अलग अलग
निजी और एकाकी विश्व
हमे अपने कानून के सत्य
अपने ही गुणो के बीच जिन्दा रहना है ।"

तो क्या माता पिता मूक दर्शक बने रहें ? नही जिन्दगी इतना आसान नही हैं । हम अभिभावको का बच्चे पर स्वय अपने व्यक्तित्व की छाप छोडने या उस पर अपनी इच्छाओ को लादने के लाभ से बचते हुए उसका सहृदयतापूर्ण मार्गदर्शन करने की बेहद पेचीदा और नाजुक जिम्मेदारी निभानी पडती है ।"

इस उत्तरदायित्व को अकेले ही निभाती हुई इन्दिराजी एक सफल अभिभावक की भूमिका अदा करती रही । सन् १६४७ मे जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो उन्होने व उनके बच्चो ने बहुत गौरवान्वित अनुभव किया क्योकि उनके परिवार ने आजादी की लडाई मे मुख्य भूमिका निभाई थी सितम्बर १६४७ मे वह बच्चो सहित मसूरी गई हुई थी तो उन्हे फिरोज गांधी का फोन आया कि देहली मत आओ । कारण यही था कि भारत विभाजन के कारण दगे भडक उठे थे । फिरोज उन्हें यह बतलाना नही चाहते थे । उनके स्वय के शब्दो मे 'मैंने समझा गरमी के कारण ऐसा कहा जा रहा है । कोई और समाचार नही मिल रहा था । मैं तरह तरह के सन्देहों से घिर गई । आखिरकार एक दिन फिरोज से जो मेरे पिता के साथ थे, बात हो ही गई । उन्होने कहा 'और बातों के अलावा, यहां हमारे पास खाने के लिए भी पर्याप्त सामग्री नहीं है और आप बच्चों को यहां नहीं ला सकती" । मैंने कहा "मैं अपने साथ ढेर सारे आलू ले आऊंगी तब फिरोज ने कहा "हालात बहुत खतरनाक हैं "मैंने कहा

"यदि हालात खतरनाक है तब तो बजाय यहां अकेले बैठे रहने के मुझे वहां पहुंचना चाहिए।" मैंने समान बांधा और रवाना हो गई। साथ में दो बोरी आलू भी ले लिए। शाहदरा और देहली के बीच गाड़ी रुक गई। झांका तो देखा लोग किसी का पीछा कर रहे थे। मैं तुरन्त गाड़ी से उतर पड़ी और स्थिति पर नियन्त्रण किया। मैं एक व्यक्ति को तो बचाने पर सफल हो गई।" अस्वस्थ होते हुए भी और दो छोटे बच्चों का साथ होते हुए भी इस प्रकार का आचरण करना उनके उसी स्वभाव का दिग्दर्शन कराता है जिसका प्रारम्भ मे आ जिक्र हो चुका है, वह हैं उनके व्यक्तित्व का एक अनूठा अंग, उनकी निर्भीकता।

८ सितम्बर १९६० को जब उनके पिता की मृत्यु हुई, तो राजीव १६ वर्ष के और संजय १४ वर्ष के थे। नाना की मृत्यु भी २७ मई १९६४ को हो गई। अब बच्चे केवल अपनी मां के सम्पर्क में ही रहे। दून स्कूल व अन्य विद्यालयों में अपनी शिक्षा पूरी करके राजीव तो अपनी इच्छानुसार PILOT बन गया किन्तु संजय प्रारम्भ से ही चंचल प्रकृति के थे। श्री नेहरू के लिए भी और इन्दिरा जी के लिए भी स्वाभाविकतया यह बहुत दुःख का विषय था कि वह दोनों जो आशाएं संजय से लगाए बैठे थे उसके अनुरूप उसका आचरण नहीं था। कई अमीरजादा व बड़े V I P व्यक्तियों के बच्चे मिलकर देहली में मौज मस्ती उड़ाया करते थे उन्हीं में से संजय भी एक था।

संजय ने भी एक सिख लड़की मेनका आनन्द को पसन्द कर लिया था और उसके साथ अक्सर देखा जाने लगा था। मेनका के पिता सेना में थे। उन्होंने जब यह देखा व सुना तो इन्दिरा जी पर दबाव डाला कि संजय व मेनका का विवाह हो। उनके विवाह में परिवार के एक मित्र युनुस ने मुख्य भूमिका निबाही और अन्तत इन्दिरा जी के मां की भूमिका में थोड़ासा परिवर्तन हुआ और वह सास बन गई। भारतीय नारी जब सास बन जाती है तो शायद उसका वह रूप सम्मुख आ जाता है

जिसमें ममता कम प्रभुत्व अधिक रहता है। सोनिया विदेशी लड़की होते हुए भी इन्दिरा जी के अधिक समीप रही और इन्दिरा जी अपने व्यस्ततम समय में भी अपने पोते राहुल व प्रियंका के लिए समय निकालती रहीं किन्तु मेनका से प्रारम्भ से ही उसका बहुत अधिक लगाव नहीं था। हाँ संजय का पुत्र वरुण उन्हें अवश्य ही बहुत प्रिय था।

छोटे बेटे की आकस्मिक मृत्यु इन्दिरा जी के लिए एक त्रासदी थी। संजय को हवाई उड़ाना का शौक था और यदा कदा वह अपना स्वयं का हवाई जहाज दूर आकाश में ले जाता था और फिर गुनाखियां खाता रहता था। उस दिन नियति के हाथों अपने इसी खिलवाड़ में वह मारा गया। उनकी घनिष्ठ मित्र पुपुल जयकर इसी सम्बन्ध में लिखती हैं "छोटे बेटे की आकस्मिक मृत्यु ने उस पर जो आशाएं वह लगाए बैठी थी, कुठाराघात थी पर इन्दिरा जैसी स्त्री में दुःख हताशा का रूप नहीं धारण करता। अपने छोटे पोते वरुण से अलग होना उनका दूसरा बहुत बड़ा दुःख था पर वह उसे भी पी गई। मुझसे उन्होंने एक बार कहा था "पुपुल, दुख बहुत गहरे जाकर मनुष्य के व्यक्तित्व पर फैल जाता है और तब वह मनुष्य के पूरे व्यक्तित्व का ही हिस्सा बन जाता है।" संजय की मौत के बाद मैंने महसूस किया कि इन्दिरा जी रातोंरात भीतर से बहुत बुजुर्ग हो गई थीं और इस बुजुर्गियत ने उनके व्यक्तित्व को एक बहुत बड़ी गहरी दार्शनिक प्रौढ़ता दे दी थी।

संजय की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने अनुभव किया कि जो आशाएं व आकांक्षाएं उन्हें संजय से थी वह राजीव ही पूरी कर सकता है। राजीव राजनीति में नहीं आना चाहते थे किन्तु सभी परामर्शकों व मां के जोर देने पर उन्होंने अपनी पाइलेट की नौकरी छोड़कर राजनीति में प्रवेश किया। मेनका कुछ समय तक तो इन्दिरा जी की आज्ञाकारी बहू बनी रही किन्तु सफदरजंग रोड उन्हें अधिक देर तक बांधे न रह सका। वह भी राजनीति में उतरना चाहती थी और संजय के मित्र उसे अपनी

पलग पार्टी बनाने के लिए प्रेरित कर रहे थे । यही से सास का बहू पर नियन्त्रण और बहू का पारिवारिक परम्परा को छोड़कर बाहर आने का भारतीय सास बहू का पुराना झगड़ा प्रारम्भ हुआ । सभी लोग यह चर्चा करने लगे कि इंदिरा जी साधारण सास की भांति ही बहू को अपने नियन्त्रण में रखना चाहती है । किन्तु मेनका सभी बन्धन तोड़कर राजनीति मे आना चाहती है । "अन्तत मेनका को 1, सफदरजंग रोड छोड़कर जाना पड़ा । यह घटना आलोचना का केन्द्र बनी और एक युवा विधवा के रूप में जिसे सास ने अपने घर से निकाल दिया हो, मेनका ने सहानुभूति भी पाई । किन्तु यदि इंदिरा जी के दृष्टिकोण से देखे, मेनका परम्पराओं का उलटा करना चाहती थी और पारम्परिक बन्धनों को तोड़ना चाहती थी । वरुण का भी अपनी मा के साथ जाना उन्हे बहुत अखरा क्योंकि संजय की मृत्यु के पश्चात् वह वरुण से बहुत प्रेम करने लगी थी । साधारण दादी के समान ही वह अपने पोते पोती से अधिक घुली मिली थी ।

इन्दिरा जी का सास का रूप मेनका के सम्बन्ध मे ही भारतीय जनता के सामने आया । उनके सफदरजंग छोड़ने के पश्चात् से लेकर उनकी मृत्यु तक उन्होने मेनका को वह स्नेह नही दिया जो कि एक विधवा बहू को देना चाहिए । वह भी विद्रोही निकली । उनकी निजी सचिव उषा भगत लिखती हैं जो इंदिरा जी के ममतामयी मा के रूप का चित्रण करता है । लोग ऐसा क्यो समझते हैं कि अगर मां घर से बाहर काम के तो अपने बच्चो को मा का प्यार नहीं दे पाती ? जो माएँ घर पर रहती है क्या उनमे से ज्यादातर दिन भर घर पर रहने के बावजूद अपने बच्चो से उदासीन नहीं रहती ? उनके मा के रूप को स्पष्ट चित्रित करते हुए वह लिखती है "मैंने खुद देखा है कि जब उनके बच्चे छोटे थे वे चाहे सिर्फ आधा घन्टा उनके साथ बिताती पर वे क्षण इतने आत्मीय और निजी होते थे कि बच्चों को कभी भी मा की दूरी नही खलती थी ।"

औसत मांग्रा की तरह मैंने उन्हें कभी बच्चा के पीछे पडते नहीं देखा कि ऐसा खाओ वैसा खाओ, ऐसा करो, वैसा करो, मैं अक्सर देखती थी कि फुरसत मिलने पर दोनों बच्चो के साथ वे अपने कमरे में लेट जाती। उन्ह अगल बगल मे ले लेती और उनसे बात करती रहती थी फिर किसी किताब से पढ़कर उन्हें कुछ सुनाती रहती। अपने बेटे के बच्चो के साथ भी उनका सहज पर किसी भी तरह का दिखावटी भावुकता से परे का बहुत सहज और खुला रिश्ता था। जसा कि अक्सर होता है बतौर दादी के उनका अनुशासन अपने बेटे के बच्चो पर बहुत नरम था। कभी राजीव यदि खाने की मेज पर बच्चो को अनुशासित करने का जरा सख्ती से कुछ कहते थे, तो वे बडी नरमाई से आडे आ जाती।" पोते वरुण से बिछुडना उन्हे दुख दायी लगा। उषा भगत ही कहती है "उनके मन मे एक गहरी कचोट जरूर थी अपने छोटे पोते वरूण से न मिल पाने की। इस एक बात मे उन्हें बडी तकलीफ पहुचाई थी। पर जसा कि मेरा विचार है वह भावनाओ के मामले मे बहुत अनुशासित थी। उन्होंने इसको अपने तक ही रखा। बार बार मेनका वादा करती कि बच्चे को भेजेगी पर फिर नहीं भेजती। इससे सचमुच बहुत कष्ट होता था। इस बात को जरूरत से ज्यादा तूल देना वे नही चाहती थी। अगर वह जिद करती तो शायद नतीजे मे और अधिक हल्ला-गुल्ला व कष्ट होता। वैसे मुझे हमेशा लगता था कि सचमुच इसमे सबसे बडा नुकसान बेचारे बच्चे का ही हुआ है। क्योकि दादी के प्यार की सबसे ज्यादा जरूरत उसे थी। तमाम दुखों के बावजूद श्रीमती गाधी अपना जीवन लगभग पूरा जी ही चुकी थी, पर उनके भीतर जो स्नेह था उसे बच्चे के लिए, उससे उस मासूम को वचित करना उसके प्रति अन्याय था।

५. सास के रूप में सोनिया ने व दादी के रूप मे प्रियंका व राहुल ने जो स्नेह इन्दिरा जी से पाया अभाग्यवश व अपनी जिद के कारण मेनका उसको न पा सकी और वरूण को भी उसने उसके स्नेह से वचित रखा। जायदाद के विषय मे भी न्यायालय जाना व सास-बहू की पारस्परिक

खींचातानी एक आलोचना का विषय रही है किन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् मेनका का उनके शव के पास रोना और यह कहना "मम्मी आप मुझसे नाराज ही बिछुड़ गईं" कहीं गहरे में आकर मन को कचोटता है। गलती शायद दोनों की ही थी किन्तु इससे यह तो स्पष्ट हो गया कि इन्दिरा जी नारी के रूप में अन्य साधारण नारियों से भिन्न नहीं थी।

राजनेता के रूप में

इन्दिरा जी का चित्रण करते हुए सर्वप्रथम उनका जननेता का रूप ही सम्मुख आता है। उनका कहना था कि जीवन में उनका आदर्श फ्रांस की संत वीरांगना जान-आफ आर्क थी। जान, जिसने खण्ड खण्ड होते अपने देश को अपने साहस से पन्द्रहवीं शताब्दी के अंधकारमय काल में एकता और अखण्डता की डोर से बांधा था। जोन एक स्वप्नदर्शी थी और एक योद्धा थी। फ्रांस तो एक जुट हो गया किन्तु जोन को उन्हीं देशवासियों से भिन्न यातनामय मृत्यु दण्ड यह कहकर कि यह एक डायन थी। किन्तु बलिदान की चार सदियां बाद जोन को एक संत के रूप में ख्याति मिली। श्रीमती गांधी और जोन के जीवन में एक अद्भुत साम्य है दोनों ने नारी होते हुए भी एक स्त्री विरोधी वातावरण में अपने देश की अखण्डता का स्वप्न देखा और उसे साकार किया। उत्तर में उन्हें मिला अपमान, आलोचना और सन्देह और दोनों ही जब स्वर्गवासी हो गईं तो देश ने और दण्ड देने वालों ने अनुभव किया कि उन्होंने क्या खो दिया। उन्हें खोने के पश्चात् ऐसा लगने लगा कि राजनीति का भार अब इतनी सरलता से कौन सम्भाल पायेगा। उनके मृत्यु के पश्चात् यूं तो असंख्य श्रद्धांजलियां उनको भेंट की गईं। अत्याधिक भावुकता से ही हृदय की सच्ची बातें उभर कर आती हैं। राजनेता के रूप में जो एक श्रद्धांजली उनके व्यक्तित्व को उभारती है वह है मावू अब्राहम की। उनके कथनानुसार "believed for the last many years that she was one of the

कभी कभी हम सोचते सोचते और सपने देखते देखते खयाल करने लगते है कि मानो हम भी उसी पुराने जमाने म चले गए हैं और उस पुराने जमाने के उन और वीरांगनाओं के समान हम भी बहादुरी का काम कर रहे हैं। क्या तुम्हें याद है कि जब तुमने पहले पहल जान आफ आर्क' की कहानी पढ़ी थी और तुम्हारे दिल मे कितना हौसला पैदा हुआ था कि तुम भी उसी की तरह कुछ काम करो। साधारण मर्दों और औरतों में आमतौर पर भी साहस की भावना नही होती है महान नेताओं मे कुछ ऐसी बाते होती हैं जो सारी जाति के लोगो में जान पैदा कर देती है और उनसे बड़े बड़े काम करवा देती है लगता है अपने पिता के इस उद्बोधन से इंदिरा गांधी को जन नेता बनने की प्रेरणा मिली और इन्ही प त्रों ने उनके ऐसे व्यक्तित्व को बनाने और सवारने में नींव का काम किया जो राजनेता के रूप में वर्षों पश्चात् जनता के सामने उभर कर आया। श्री नेहरू ने १९३० में अपने एक और पत्र लिखा "मेरी बड़ी कामना है, तुम बड़ी होकर एक देश सेवक और एक बहादुर सिपाही बनो।" अपने पिता की कामना की पूर्ति इंदिरा जी ने पूर्णतया करने का प्रयास किया और उससे देश का बच्चा बच्चा परिचित है। पत्राचार पाठ्यक्रम दो वर्षों पश्चात् पाया नेहरू जी ने अपनी पुत्री को पत्राचार द्वारा ही शिक्षा दी और ऐसी शिक्षा दी जिसने उन्हें आगे जीवन मे जनमानस के नेता का पद प्राप्त करने मे सफलता पा सका।

शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् १९४२ को उनका विवाह हुआ और वह भी ऐसे व्यक्ति से जिसकी आकांक्षाएँ भी देश सेवक बनने की ही थी। अगस्त १९४२ बम्बई कांग्रेस अधिवेशन म अंग्रेजो भारत छोड़ो का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुआ। वास्तव में यह प्रस्ताव अधिवेशन मे भाग ले रहे युवा-वर्ग जिनका इन्दिरा व फिरोज गाधी भी थे की पहल थी जो कि अंग्रेजो के पंजे से भारत की आजादी के लिए किसी निर्णायक पहल के पक्षपाती थे। ८ अगस्त १९४२ को यह प्रस्ताव पारित किया

great leaders of our time, greater than Winston Churchill De Gaulle or Fidel castro, She was certainly more versatile, had broader interests and tastes than them"

(H Times Sunday Magazine Nov 14, 1984)

शैशव काल से ही इन्दु प्रियदर्शिनी के सम्मुख था स्वतन्त्रता संघर्ष से निखरा राष्ट्रीय चरित्र और अपने जीवन का न्यौछावर करने वालों का सान्निध्य। उन सबके प्रभाव से देश प्रेम से सिंचित एक छोटा सा पौधा आनन्द भवन के प्रांगण में बड़ा होने लगा। महान् पितामह व पिता कमला जैसी विदूषी माता, रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे गुरु का सामंजस्य पिता व पितामह द्वारा बार बार जेल जाना व देश के प्रति आत्मोत्सर्ग, इन सब परिवेश में इस पौधे को ऐसा सींचा कि वह आगे चलकर विश्व की एक योग्य साहसी और प्रखर बुद्धि प्रधान मन्त्री की सत्ता पा सकी। महात्मा गांधी जैसे सन्तों का मार्ग दर्शन था उन्होंने जो वानर सेना का नेतृत्व किया वही उनके राजनेता बनने की जड़ें नीचे बन गई।

इन्दिरागांधी मे परिस्थितियों से जूझने की और खतरों का सामना करने की अद्भुत क्षमता थी। जो उन्हें भारत की सबसे बड़ा व प्रिय जन नेता बनने में सहायक हुई। इन्हीं गुणों का प्रभाव उनके स्वभाव पर स्वाभाविक ही था। फलस्वरूप वह एक ऐसी नेता बनने जो अत्यन्त महत्व कांक्षी जीवट भरी व जिद्दी स्वभाव की थी। ऐसा प्रतीत होता है कि यह स्वकांक्षा व जीवट के लक्षण उनमें बचपन से ही प्रकट होने लगे थे। इसका प्रमाण जवाहरलाल नेहरू की Glimpses of world History नामक पुस्तक में मिलता है जो उन्होंने नैनी सेन्ट्रल जेल से १९३० में इन्दिरा प्रियदर्शिनी के नाम पत्रों के रूप में लिखी थी। इस पुस्तक में पहले पत्र के रूप में वह लिखते हैं "इतिहास की किताबों में हम राष्ट्रों के जीवन में बीतने वाले बड़े बड़े जमानों की व महान पुरुषों की और महिलाओं का हाल और उनके शानदार कारनामों की कहानियां पढ़ते ही रहते हैं।

कभी कभी हम सोचते सोचते और सपने देखते देखते खयाल करने लगते है कि मानो हम भी उसी पुराने जमाने मे चले गए हैं और उस पुराने जमाने के उन वीर वीरांगनाओं के समान हम भी बहादुरी का काम कर रहे हैं। क्या तुम्हें याद है कि जब तुमने पहले पहल 'जान आफ आर्क' की कहानी पढ़ी थी और तुम्हारे दिल मे कितना हौसला पैदा हुआ था कि तुम भी उसी की तरह कुछ काम करो। साधारण मर्दों और औरतो मे आमतौर पर भी साहस की भावना नही होती है महान नेताओं म कुछ ऐसी बाते होती हैं जो सारी जाति के लोगो में जान पैदा कर देती है और उनसे बडे बडे काम करवा देती है लगता है अपने पिता के इस उद्‌बोधन से इंदिरा गांधी को जन नेता बनने की प्रेरणा मिली और इन्हों प ेने उनके ऐसे व्यक्तित्व को बनाने और सवारने में नींव का काय किया जो राजनेता के रूप में वर्षो पश्च त् जनता के सामने उभर कर आया। श्री नेहरू ने १९३० मे अपने एक और पत्र लिखा "मेरी यही कामना है, तुम बडी होकर एक देश सेवक और एक बहादुर सिपाही बनो।" अपने पिता की कामना की पूर्ति इंदिरा जी ने पूर्णतया करने का प्रयास किया और उससे देश का बच्चा बच्चा परिचित हैं। पत्राचार पाठ्यक्रम तो वर्षो पश्चात् आया नेहरू जी ने अपनी पुत्री को पत्राचार द्वारा ही शिक्षा दी और ऐसी शिक्षा दी जिससे वह आगे जीवन मे जनमानस के नेता का पद प्राप्त करने मे सफलता पा सकी।

शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् १९४२ को उनका विवाह हुआ और वह भी ऐसे व्यक्ति से जिसकी आकांक्षाएँ भी देश सेवक बनने की ही थी। अगस्त १९४२ बम्बई कांग्रेस अधिवेशन मे अंग्रेजो भारत छोडो का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुआ। वास्तव मे यह प्रस्ताव अधिवेशन मे भाग ले रहे युवा-वर्ग जिनका इन्दिरा व फिरोज गांधी भी थे की पहल थी जो कि अंग्रेजो के पंजे से भारत की आजादी के लिए किसी निर्णायक पहल के पक्षपाती थे। ८ अगस्त १९४२ को यह प्रस्ताव पारित किया

गया और अगले दिन सबेरे चार बजे के लगभग जवाहरलाल नेहरू गिरफ्तार कर लिए गए। कांग्रेस के अन्य बड़े बड़े नेता भी जन के किसी तरह भ बन्द कर दिए गए। पुलिस इंदिरा व फिरोज गांधी को भी पकड़ना चाहती थी पर वह हाथ नहीं आए। वेश बदलकर वह किसी प्रकार इलाहाबाद चले गए। कुछ दिनों बाद अत्यन्त रोमांचक क्षणों में नव दम्पति एक साथ गिरफ्तार कर लिए गए।

उन दिनों फिरोज गांधी भूमिगत रहकर कांग्रेस पार्टी का काम करते थे। उन्होंने अपनी दाढ़ी बढ़ा ली और खादी के कपड़े पहनने लगे। उन्होंने सफेद के स्थान पर चटक रंग के कपड़े ही पसन्द किए थे जिससे उन्हें एंग्लो इण्डियन युवक ही समझने का भ्रम होने लगा। इंदिरा और फिरोज इन दिनों ऐसे मित्र के घर पर मिलते थे जिनका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं होता था। कारणवश उन पर पुलिस की निगाह नहीं होती थी। परन्तु पुलिस के मुखाबिर सभी जगह मौजूद रहते थे। कोई भी क्षण खतरे से खाली नहीं था। फिरोज दम्पति पुलिस की गिरफ्त में न आने का भरसक प्रयत्न करते रहे।

तभी एक दिन जेल से इंदिरा को जवाहरलाल नेहरू का एक महत्वपूर्ण सन्देश मिला। उसको जनता तक पहुँचाना अत्यन्त आवश्यक था। सन्देश को पोस्टरों पेम्फलेटों आदि के द्वारा पहुँचाना सम्भव न था। अतः कांग्रेस कार्यकर्ताओं की एक सभा बुलाई गई। सावधानी के बावजूद भी पुलिस को इसकी भनक पड़ गई व जैसे ही कार्यकर्ता नेहरू जी का सन्देश जानने को इच्छुक हो एकत्रित हुए निश्चित समय पर इंदिरा जी किसी छिपे स्थान से अचानक ही निकल आईं। वे सन्देश की भूमिका बना ही रही थीं कि एकाएक में मेरे अंग्रेज सैनिकों ने बैठक के स्थान को घेर लिया। इन्दिरा जी के वक्तव्य से अंग्रेज सैनिक उत्तेजित

ही ।ठे और उन्होंने चारों ओर राईफल बजा ली । एक राईफल की दूरी तो उनके सिर स बीच ही गई ही थी चारों ओर की हुई सफलता से भी इन्दिरा विचलन न हो हुई वे अपना कार्य बराबर करती रहीं । तभी एक अंग्रेज सैनिक ने उन्हें संगीन से छू दिया । इंदिरा जी के स्वय के शब्दों म "मने अपने छिपने की जगह से निकल कर भाषण शुरू किया ही था कि बन्दूके ताने सिपाही हमारी ओर लपक पड़े । हमे चारों ओर से घेर लिया गया और एक सिपाही संगीन तानकर मेरी ओर बढ़ा । उसकी संगीन मेरी जिस्म को छूने लगी थी । दूर छज्जे पर खड़े फिरोज यह देख रहे थे । वे बेहद उत्तेजित हो उठे । भूल गए कि वह भूमिगत है । वे सीधे मेरे पास आए । उस सिपाही से बोले या तो बन्दूक हटाओ या भाग जाओ । हम सभी को गिरफ्तार कर लिया । जेल की गाड़ी की ओर मुझे ले जाने के लिए सार्जेंट ने मेरी कोट पकड़ने की गल्ती कर दी । लोगों ने हम चारों ओर से घेर लिया । कुछ महिला कार्यकर्ताओं ने भी मेरी बाहू पकड़ ली । दोनों ओर की खींचतान में मैं इस तरह फंस गई थी कि पल भर के लिए लगा कि शरीर फट जायेगा । पुलिस की गाड़ी में जेल तक का सफर एक असाधारण अनुभव था । गाड़ी में बैठे पुलिस सिपाही मेरी बातों से इतने मर्माहत हुए कि उन लोगों ने अपने किए की माफी मांगनी शुरू कर दी । उन्होंने अपने साफे मेरे कदमों पर रख दिए । इनमें से कुछ तो दुःख से रो पड़े, बोले हम क्या करते ? नौकरी का फर्ज था ।" (जीवन के कुछ पृष्ठ से)

फिरोज व इंदिराजी दोनों को यह आशा थी कि कम से कम सात साल तो कृष्ण भवन में ही बिताने पड़ेंगे परन्तु ९ माह बाद १३ मई १९४३ को इंदिरा जी को छोड़ दिया गया । उस कष्ट व यात्रा का स्मरण करते हुए इंदिरा जी स्वयं लिखती हैं "एकाएक ही जेल से छूटने

पर ऐसा अनुभव हुआ मानो मैं किसी अपचार भरे भाग से एकाएक ही बाहरी प्रकाश में आ गई हूं । जीवन के वेग से चकाचौंध रह गए रंगो, आकारों, विचारों और ध्वनियों की विविधता ने मुझे चकाचौंध भर दिया।"

अगस्त १९४३ में फिरोज को भी छोड़ दिया गया। कुछ दिन बाद आनन्द भवन में नेहरु परिवार के आग्रह पर फिरोज गांधी व इंदिरा गांधी रहने लगे जो 'स्वराज्य भवन' कहलाकर आजादी के आंदोलन का केन्द्र बन गया। जब से लेकर ३१ अक्टूबर १९८४ तक अर्थात् मृत्यु तक इंदिरा जी जन मानस पर छा गई और जन नेता व देशमाता के रूप में प्रसिद्ध हुईं। इंदिरा गांधी अब इतिहास की वस्तु बन गई। जब हम अपने आस भूतकाल की ओर नजर डालते हैं तो यह अनुभव भारत के प्रत्येक देशवासी को होता है कि उन्होंने देश को जिन बुलन्दियों पर पहुंचाया वह कुछ वर्ष पूर्व तक कल्पना भी नहीं थी। बैलगाड़ी के युग से भारत छलांग लगाकर अणुबम और अंतरिक्ष युग का देश बन गया। १९६६ में अगले १५ वर्षों की अवधि भारत के लिए महान उपलब्धियों की अवधि रही है वैज्ञानिक उपलब्धी सर्वाधिक रही और इसका कारण रहा है भारत को इंदिरा गांधी जैसे नेता का नेतृत्व। श्रीमती गांधी का राजनीति वर्चस्व, उनका काम करने का एकत्रित तरीका और अंतर्राष्ट्रीय रंग मंच पर जाज्वल्यमान सितारे की तरह कौंधते हुए तपस्या। उनकी सफलताओं ने उनकी वैज्ञानिक उपलब्धियों को आच्छादित भले ही कर दिया हो किन्तु भारत को विज्ञान के क्षेत्र में उनकी देन को कम करके नहीं देखा जा सकता। भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का कार्य क्षेत्र होने का गौरव राजस्थान को भी मिला। जब देश का पानी पर आधारित अणुशक्ति संयत्र चालू हुआ तो वह कोटा के निकट राणा प्रताप सागर बांध पर ही बना। इसकी पहली इकाई ने १९७३ में अपना व्यवसायिक बिजली

उत्पादन प्रारम्भ किया। राजस्थान नहर परियोजना (जो अब इन्दिरा गांधी नहर परियोजना के नाम से जानी जाने लगी है) राजस्थान की रेतीली व बंजर धरती के लिए हरियाली व खुशहाली का वरदान लेकर आई है।

इन्दिरा गांधी ने १८ मई १९७४ को लाख विरोध के बावजूद भी प्रथम अणुविस्फोट कर भारत के साथ राजस्थान को भी विश्व के आणविक मानचित्र पर अंकित कर दिया है। उनके इस भूमिगत आणविक परीक्षण का विरोध विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय अणुशक्तियो ने ही नही किया था बल्कि देश मे भी ऐसे कतिपय तत्व थे जो उनके इस साहसिक अभियान की आलोचना करते रहे। किन्तु उन्होने दृढ निश्चय तथा साहस का परिचय देते हुए यह सिद्ध कर दिया कि भारत न केवल एक अणुशक्ति वाला देश है वरन् वह शांतिपूर्ण कार्यों के लिए इसका उपयोग करने की तकनीक में भी दखल रखता है। यह भी दिखा दिया कि भारत अपनी अणु नीति किसी के दबाव व प्रभाव मे आकर नहीं, राष्ट्रीय हितो को ध्यान में रखकर निर्धारित करने के लिए स्वतन्त्र है। अणुशक्ति सम्पन्न देशों ने उन पर कई तरह के दबाव डाले। राणाप्रताप सागर अणु संयत्र के लिए पानी देने से इनकार कर दिया। परिस्कृत यूरेनियम भेजने के भी करार किए हुए देश मुकर गए पर श्रीमती गांधी ने कहीं भी कमजोरी नही दिखाई और राष्ट्रीय हितो व स्वाधीनता मे निर्णय लेने की क्षमता की कीमत पर कभी समझौता नही किया। पश्चिम अणुशक्ति सम्पन्न देश चाहते थे कि भारत अणुशक्ति नियन्त्रण समझौते पर हस्ताक्षर करदे और अपने आणविक कार्यक्रमो को अन्तर्राष्ट्रीय देखरेख के लिए खुला रखे जबकि वे देश स्वयं ऐसे किसी प्रतिबन्ध को मानने के लिए तैयार नही हैं। परन्तु श्रीमती गांधी स्पष्टतः इन सब शक्तियो को बताती रही कि वह इन करारो को मानने के लिए बिल्कुल भी तैयार नही है। जिसमे कुछ देशो को दूसरे से अधिक अधिकार या मनमानी करने की स्वतन्त्रता दी गई हो।

और इस प्रकार शांतिपूर्ण कार्यों के लिए अणुशक्ति के विकास और उपयोग में भारत ने अपनी स्वतन्त्रता कायम रखी। इसका सारा श्रेय इंदिरा जी के नेतृत्व को जाता है।

श्रीमती इंदिरा गांधी के शासन काल में ही भारत ने उपग्रह युग में प्रवेश किया। आर्यभट्ट भास्कर और भारतीय उपग्रहों की श्रृंखला की अपनी अलग कहानी है किन्तु १९७५ में अमेरिकन 'नासा' अन्तरिक्ष ऐजेंसी के सहयोग से भारत ने गांवों में दूरदर्शन का प्रसारण पहुंच कर एक नई संचार क्रांति का प्रारम्भ किया जो अपने आप में भारत के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन कार्यक्रम के अन्तर्गत एक वर्ष की अवधि के लिए अमेरिका उपग्रह की सेवाएँ प्राप्त कर उसके माध्यम से देश के लगभग २४०० गांवों में जहां यह प्रसारण कल्पनातीत था, दूरदर्शन के माध्यम से कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण व समाजशिक्षण के शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित करने का अभिनव प्रयोग किया गया।

सौभाग्यवश देश के ६ राज्यों के लिए किए गये प्रयोगात्मक प्रसारण का लाभ राजस्थान के चार सौ गावों को भी मिला तथा कोटा सवाईमाधोपुर और जयपुर जिले के सुदूरस्थ गावों के निवासी इससे लाभान्वित हुए। राजस्थान में दूरदर्शन का यह पहला प्रयोग था और गांववासी महाभारत काल में संजय द्वारा अंधे राजा धृतराष्ट्र को आंखों देखा हाल बतलाते हुए व अन्य पौराणिक चमत्कारों को अपने सामने घरने ही गांव में देखकर चमत्कृत थे। ग्रामीण क्षेत्रों की छोटी, छोटी शालाओं में वैज्ञानिक शिक्षण तो क्या, जहां टाट-पट्टी भी बैठने के लिए उपलब्ध नहीं थी, दृश्य श्रव्य माध्यम से बालकों को विज्ञान की शिक्षा देने का प्रयोग भी बहुत सफल रहा। और उसी से प्रभावित होकर इंदिरा जी ने दूरदर्शन का देश के गांव गांव में प्रचार व प्रसार करने की योजना को क्रियान्वित करवाया। अब 'नासा' उपग्रह की तरह इन्सेट १ बी भारतीय उपग्रहण का

उपयोग किया जा रहा है जो न केवल दूरदर्शन व टेलिफोन जैसे संचार माध्यमों में बल्कि ग्रामीण और दूरवर्तीय अध्ययनों में भी बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। श्रीमती मृत्यु पर इंदिरा जी ने सम्पूर्ण भारत में दूरदर्शन के लगभग १८० केन्द्र स्थापित करवा दिए जिनके द्वारा उनकी मृत्यु पश्चात भी लगभग सारे भारत की जनता अपने प्रिय नेता के दर्शन कर सकी। यह कहें कि लोग दूरदर्शन को इंदिरा दर्शन के नाम से पुकारने लगे थे। किन्तु उन्होंने तो कभी स्वयं इंदिरा जी ने कभी यह नहीं सोचा होगी कि जिन दूरदर्शन केन्द्रों को औसतन एक प्रतिदिन के हिसाब से हर प्रान्त व प्रदेश के दूर कोने में खुलवाने का उपक्रम वह करवा रही है वह उनकी मृत्युपरान्त उनके दर्शन करवाकर उनके देशवासियों में बैठे हुए अनेकानेक भारतीयों के हृदय पर उनकी छाप को और सुदृढ़ कर देगा। विश्वास है कि पहली बार भारतवासियों ने केवल इसी दूरदर्शन के माध्यम से अपनी प्रिय नेता के दर्शन किए व उनकी अंतिम यात्रा में भाग लिया। इंदिरा लहर जो सहानुभूति से भरी थी का लाभ कांग्रेस (इ) को लोकसभा चुनाव में भारी बहुमत प्राप्त करके मिला और इसका सबसे बड़ा कारण रहा दूरदर्शन जिस पर तीन दिन तक लगातार भारतीय जनता अपनी दिवंगत नेता के दर्शन करती रही।

अक्सर इंदिरा गांधी पर सोवियत संघ के प्रति अधिक सम्मान का आरोप लगाया जाता है किन्तु यह भुला दिया जाता है कि राष्ट्र हित को सर्वोपरि मानकर जिस दिशा से भी सहयोग मिला उसे ही उन्होंने अपने कार्यक्रमों की क्रियान्विति के लिए स्वीकार किया। आरम्भिक उपग्रह सम्बन्धी प्रयासों के लिए जहां उन्होंने अमेरिका की विकसित तकनीक का सहारा लिया वहां भारतीय उपग्रह छोड़ने तथा भारतीयों को अन्तरिक्ष में भेजने के काम में सोवियत रूस को अपना सहयोगी बनाया। सोवियत रूस के सहयोग से दो भारतीयों राकेश शर्मा व रवीश मल्होत्रा को यात्रा के लिए प्रशिक्षित करने और अन्त में राकेश शर्मा को प्रथम भारतीय ही

यहाँ प्रथम एशियायी यात्रा का गौरव दिलाने में इन्दिरा जी का सहयोग व प्रेरणा की भूमिका मुख्य रही। अपने व्यस्ततम समय में से भी कुछ समय निकाल कर इन्दिरा जी ने अन्तरिक्ष में घूम रहे राकेश शर्मा से की मनोरंजक बातचीत की जो इस बात का प्रतीक है कि उन्हें इस अभियान में कितनी रुचि थी। क्या उपलब्धि हुई ? यह प्रश्न कई पूछते हैं। और पूछेंगे भी किन्तु उत्तर यही है कि प्रारम्भिक उपलब्धियों का जायजा लेने पर भी हिमालय की ऊचाईयां को छूती नजर नहीं आती है। क्या हर भारतीय के लिए यह कम गौरव की बात है कि हम में से एक विश्व की परिधि से परे अन्तरिक्ष की यात्रा का अवसर प्राप्त कर चुका है। जबकि हमारे अन्य पड़ोसी देश या तीसरी दुनिया के लोग इसकी कल्पना भी नहीं कर पा रहे थे।

अन्तरिक्ष की नहीं, समुद्र की गहराइयां में भी भारतीय वैज्ञानिकों ने खोज की शुरुआत की। श्रीमती गांधी ने दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में भी भारतीय अभियान दल भेजने की पहल दिखाई। और उन्हीं की प्रेरणा से वहां हमारे वैज्ञानिकों ने एक स्थायी प्रयोगशाला स्थापित करने में सफलता पाई।

विज्ञान व नई तकनीक का देश के विकास कार्यों में उपयोग करने की नीति का प्रारम्भ तो प्रथम प्रधानमन्त्री नेहरू के समय में ही हो गया था। मार्च १९५८ में संसद ने एक प्रस्ताव द्वारा इस नीति पर अपनी मुहर लगा दी थी किन्तु श्रीमती गांधी ने विज्ञान व तकनोलोजी का एक स्वतन्त्र विभाग ही कायम कर दिया व उसका प्रभार भी अपने पास रखा। यह सिद्ध करता है कि देश की प्रगति को वैज्ञानिक आधार देने के लिए वह कितना महत्व देती थी परन्तु श्रीमती गांधी ने भारत की मूल संस्कृति और अहिंसा को आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से धूमिल नहीं होने दिया। उनका सदा ही प्रयास रहा कि विज्ञान का प्रयोग देश की गरीबी और अभाव को दूर करने के लिए ही किया जावे। आणविक

परीक्षण भी केवल उन्होने देश के निर्माण कार्यों मे सहायक के रूप मे उपयोग करने के लिए किया। विश्व के अन्य देशो की तरह संहारक साधन के रूप म नहीं किया।

इन्दिरा गांधी शांति की साधिका तो थी ही शक्ति व दृढ़ता की भी प्रतिमूर्ति थी। अपने प्रधान मन्त्री काल मे उन्होने एक के बाद एक ऐसा कदम उठाया जो कि साहसिक था व सराहनीय रहा। राजाओं के प्रिवीपर्स खत्म कर दिये, बैंको का राष्ट्रीयकरण कर दिया और मोरार जी को मन्त्री मण्डल से निकाल दिया। इस प्रकार उन्होंने नेतृत्व की व्यक्ति परक लड़ाई को विचारधारात्मक युद्ध मे बदल दिया। वह गरीब जनता की मसीहा बन गई जिनके गतिशील गाड़ी के पहिया को सत्ता के भूखे पुरान पथी नेता रोकने का प्रयत्न कर रहे थे। ३ मई १९६९ को जाकिर हुसैन की मृत्यु के बाद, सिन्डीकेट ने इन्दिरा गांधी को झुकने के लिए संजीव रेंडी का नाम राष्ट्रपति पद के लिए प्रस्तुत किया किन्तु इंदिरा जी ने उन्हें यह मौका नहीं दिया, और रेंडी के नाम का अनुमोदन कर दिया। उन्होंने 'अन्तरात्मा की आवाज' के अनुसार वोट देने और पार्टी अनुशासन से मुक्त होने को अपना अधिकार माना। फलस्वरूप संजीव रेंडी हार गए और केवल इंदिरा जी के समर्थन के कारण प्रतिपक्ष के वी वी गिरी राष्ट्रपति बन गए। कांग्रेस म फूट पड गई। कांग्रेस के अध्यक्ष जगजीवनराम व निजलिंगप्पा की अल्पमत कांग्रेस संगठन कांग्रेस कहलाने लगी और नई कांग्रेस पर इंदिरा गांधी का एक छत्र राज हो गया। युवा नेतृत्व की प्रतीक से आगे बढकर वह देश के मजदूर किसानों और शोषित-पीडित हरिजनो की नेता होने के अतिरिक्त मुस्लिम और ईसाई अल्पसंख्यकों की नेता के रूप मे उभरी। इस स्थिति का उन्होंने पूरा लाभ उठाया और लोक सभा का चुनाव १४ महीने पहले करा लिया जिसमे ५२५ मे से ३५० सीटें उनकी पार्टी को प्राप्त हुई। चुनाव जीतकर उन्होंने 'गरीबी हटाओ' को लेकर

अपने विरोधियों को चारों खाने चित कर दिया । १९७१ में बंगला देश के मुक्ति आन्दोलन को सफल बनाया और पाकिस्तानी हमले को कुंठित किया जिससे उनकी छवि में चार चांद लग गए ।

बंगला देश व पाकिस्तान युद्ध के आर्थिक दुष्परिणाम प्रकट होने लगे । १९७३ में महंगाई १३% व १९७४ में २०% बढ़ी । इसके साथ ही प्रशासन व नेताओं में भ्रष्टाचार बढ़ने के चिन्ह भी प्रकट होने लगे । इस स्थिति के विरुद्ध गुजरात के छात्रों के नव निर्माण आन्दोलन की सफलता से प्रतिपक्ष में बड़ा आत्मविश्वास पैदा हुआ । बिहार सरकार को हटाने के लिए कम्युनिस्टों ने भी आन्दोलन छेड़ दिया । इस स्थिति में पुराने वयोवृद्ध नेता जय प्रकाश नारायण कूद पड़े और प्रतिपक्ष में एकता स्थापित करने में सफल हुए । इस मध्य एक और विषय आलोचना का विषय रहा इंदिरा जी के पुत्र संजय की मारुति कार की योजना तथा उसके लिए हरियाणा सरकार से भूमि प्राप्त करने से लेकर धन जमा करने के हथकंडों का प्रयोग । इस आलोचना को इंदिरा जी ने अपनी सत्ता के लिए चुनौती समझा हालांकि पर्यवेक्षकों के सामने स्पष्ट था कि आम जनता इसके लिए उन्हें नहीं किन्हीं भ्रष्ट मंत्रियों और अफसरों को जिम्मेदार समझती थी ।

इस बीच इलाहाबाद हाईकोर्ट का १२ जून १९७५ का फैसला बम की तरह फट पड़ा जिसमें उनके चुनाव को कि हीं अनियमितताओं के कारण अवैध करार दिया गया था । प्राप्त प्रमाणों के कारण कहा जा सकता है कि इंदिरा जी पद से इस्तीफा देकर जनता की अदालत में व सर्वोच्च न्यायालय में फैसला हासिल करना चाहती थी किन्तु उनके पुत्र संजय तथा अन्य सलाहकारों ने 'एमरजेंसी' लागू करने व पिछली तारीख से संविधान में संशोधन करके उन्हें अपनी गद्दी बचाने की सलाह दी । प्रतिपक्ष के नेता जेल में डाल दिए गए । नीचे के स्तर के कार्यकर्ताओं को असह्य यातनाएँ दी गईं और शहरों को सुन्दर बनाने तथा परिवार नियोजन के

लिए मतदाता वर्गों के उद्देश्य से इतनी जोर जबरदस्ती की गई कि जब १९७७ में 'एमरजेन्सी' हटाई गई तो चुनाव करवाने पर न केवल कांग्रेस बल्कि स्वयं भी चुनाव हार गई। वास्तव में इन्दिरा गांधी में तानाशाह प्रवृत्तियां बाज रूप में हमेशा से रहा। १९७५ में 'एमरजेन्सी' लागू कर उन्होंने अपनी सत्ता तो बचाई किन्तु जनता के प्रति उनकी अगाध आस्था भी उनके मन मस्तिष्क के किसी कोने में रही। यह विश्वास करने का आधार है कि अगर स्वयं उनके पुत्र संजय ने तथा सिद्धार्थ शंकर रे व श्री ए. के. सेन जैसे प्रसिद्ध वकीलों और अन्य चाटुकारों ने उन्हें सत्ता बचाने के लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले का उल्लंघन करने की सलाह न दी होती उसको जनता के प्रति अनुचित बताया होता तो वह निश्चित ही इस्तीफा दे देती। संजय ने यही बात अपने मित्रों में स्वीकार की थी।

आपसी मतविरोधों और कुर्सी की लड़ाई के कारण जनता पार्टी के टूटने और १९८० में इन्दिरा गांधी की सत्ता में पुनः वापसी को संजय अपनी जीत बताता रहा। संजय ने 'युवा कांग्रेस' के रूप में मजबूत संगठन बनाने का प्रयत्न किया। और अगर एक विमान दुर्घटना में उसकी मृत्यु न हुई होती तो कांग्रेस (इ) का क्या रूप होता कहा नहीं जा सकता। इसके पश्चात् इन्दिरा जी ने अपने बड़े पुत्र राजीव को उत्तराधिकारी के रूप में पेश किया मगर इस बार पूर्ण सावधानी के साथ। महत्वपूर्ण प्रश्नों पर निर्णय उन्होंने अपने हाथ में ही रखे। राजीव राजनीति में आने को बहुत इच्छुक नहीं थे किन्तु माँ की आज्ञाकारी पुत्र के रूप में संजय से भिन्न उनकी छवि जन मानस पर उभरी। हो सकता है कि उनके दोनों पुत्रों के स्वभाव में महान अन्तर का भी प्रभाव रहा हो। उन्होंने कांग्रेस की व हमारी परम्पराएं पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया जिससे इस संगठन की जड़ें मजबूत हों व पार्टी को जनता का समर्थन मिले। और स्वयं उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय प्रशंसा व ख्याति मिले। संक्षेप में यह परम्परा थी मजदूर किसान जनता की सेवा जिसके लिए उन्होंने २०

शासन के दौरान भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपनी आनबान शान पर पड़ी रही। संजय गांधी की मृत्यु उनके बड़े बड़े सपनों को धराशायी कर गई किन्तु उस सदमे को भी बड़े धीरज व साहस से सहकर जिस दृढ़ता और हिम्मत का परिचय दिया वह दुर्लभ है।

इन्दिरा गांधी अब इतिहास की वस्तु बन गई है। जब हम अपने भूतकाल की ओर नजर डालते हैं तो यह अनुभव भारत के प्रत्येक देशवासी को होता है कि उन्होंने देश को जिन बुलंदियों पर पहुंचाया वह कुछ वर्ष पूर्व एक कल्पनातीत भी नहीं थी। बैलगाड़ी के युग से भारत छलांग लगाकर अणुबम और अंतरिक्ष युग का देश बन गया १९६६ से अगले १५ वर्षों की अवधि भारत के लिए वैज्ञानिक उपलब्धियों की अवधि रही है इसका कारण रहा है भारत को इन्दिरा गांधी जैसे नेता का नेतृत्व। श्रीमती गांधी का राजनैतिक वर्चस्व, काम करने का एकनिष्ठ तरीका और अंतर्राष्ट्रीय रंग मंच पर जाज्वल्यमान सितारे की तरह उनकी कौंध जैसी उनकी सफलताओं ने भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों से आच्छादित भले ही कर दिया हो पर भारत को विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उनकी देन को किसी भी प्रकार कम करके नहीं देखा जा सकता। भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का श्रेय क्षेत्र होने का गौरव राजस्थान को भी मिला। जब देश के भारी पानी पर आधारित अणुशक्ति संयंत्र चालू हुआ तो वह कोटा के निकट राणा प्रताप सागर बांध पर ही बना। इसकी पहली इकाई ने १९७३ में अपना व्यवसायिक बिजली उत्पादन प्रारम्भ किया। राजस्थान नहर परियोजना (जो अब इन्दिरा जी के नाम से ही जानी जाती है। इस रेतीली धरती के लिए वरदान सिद्ध हुई है और एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इन्दिरा गांधी ने १८ मई, १९७४ को लाख विरोध होने के बावजूद भी प्रथम अणु विस्फोट कर भारत के साथ राजस्थान को भी विश्व के आणविक मानचित्र पर अंकित कर दिया है। उनके इस भूमिगत आणविक परीक्षण का विरोध विश्व की अंतर्राष्ट्रीय अणुशक्तियों ने ही नहीं किया था बल्कि

सूत्री कार्यक्रम तैयार किया और धर्म निरपेक्षता जिसके लिए उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने के लिए बराबर काम किया। साम्राज्यवाद का विरोध तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्रामों का समर्थन जिससे उन्होंने १०१ राष्ट्रों के गुट निरपेक्ष संगठन तथा आन्दोलन में अत्यन्त सम्मानित स्थान मिला और अपने अंतिम दिनों में वह गुट निरपेक्ष राष्ट्र सम्मेलन की अध्यक्ष चुनी गई। यह इस बात का चिह्न था कि विश्व शांति की रक्षा और देश की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के पक्ष में भारत की आवाज दिनों दिन अत्यन्त प्रभावशाली होती जा रही थी।

श्रीमती गांधी ने विश्व क्षेत्र में भारतीय प्रतिष्ठा को जितना ऊंचा उठाया उतनी ही अधिक वह स्वयं ऊंची उठ गई और दुनिया के दो खेमों के संघर्ष में हर खेमा उन्हें अपनी ओर खींचने का प्रयत्न करता रहा। कुशल राजनीतिज्ञ की तरह वह किसी भी खेमे का विशेष समर्थन नहीं करती रही जिससे कि वह खेमा विश्व शक्ति संतुलन में भारी न बैठ सके और उनकी गुट निरपेक्ष नीति विश्व शांति की रक्षा के लिए निर्णय-कारी तत्व बन गई।

इस बात के सभी लोग कायल हैं कि इंदिरा गांधी में परिस्थितियों से जूझने और खतरों का सामना करने की अद्भुत क्षमता थी। इसके कारण थे उनकी महत्वाकांक्षा उनके जीवट और उनका जिद्दी स्वभाव। उनके राजनैतिक जीवन में इसके असंख्य प्रमाण मिलते हैं। जिसका अन्यत्र भी वर्णन किया गया है। सबसे पहले अपने पिता नेहरूजी की सलाह की परवाह न करके कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से केरल सरकार का तख्ता उलटवाया। १९६९ में उन्होंने कांग्रेस के बड़े बड़े दिग्गजों को अंगूठा दिखाकर कांग्रेस के दो टुकड़े कर दिए। और संगठन पर कब्जा कर लिया। बंगला देश को मुक्त कराने के लिए अपनी फौजें भेजकर उन्होंने भारी जोखिम उठाई थी। १९७५ में उन्होंने इलाहाबाद हाइकोर्ट के फैसले को संविधान में संशोधन करके ठोकर मार दी। जनता पार्टी के

जो टाये इस मह्हिद घर्ष यान की
ेत में भी ने नतिहन तत्व थे तथा ताह न परिचय
त नोतना करते रहे। किन्तु ोने दृढ़ निश्चय न मगुनालि यता न
देत हुए यह सिद्ध कर दिया कि नाभ न देकर दसका उपयोग करने की तकनीक म
है वरन् यह नातिपूण दार्यों के लिए गता घरगु नति
भी दसता ननता है। यह भी दिखा दिया कि भारत न दो न दे नपर
ि सी के द ाव व प्रभाव म प्राकर नही राप्नीय ि नों को इन तरह
निर्धारित रने के लिए स्वत त्र है। ग्रणु नि ना। देना ने उन
तरह दे ना न उ ते। ग प्त व मागर ग्रण गव न ि न दानी न स
मनाार दिया। पष्मिम दरनिवन भेजने स भी इनार व ने देन मुझ गत
नर श्रीमती गाधी ने द ने भी काज रा नहीं ि ला ग्रो र प्ट्रीय नितो व
स्वाधीनता से निना होने दे क्षमता की सीमा पर नी सम रात नहीं
थिय । पश्चिम द्रणुनालि सम्प न देन लाहते थे कि ान महाशक्ति
ि व न्ध समझौते पर हस्ताक्षर करके और नपने नाणविक कायम ो को
म तरराष्टीय देप रेख नि ए ट्ा मे जबकि वे देश स्वय ऐसा किसी
प्रतिब ध को मान्ने का तयार न ी । परन्तु श्रीमती गाधी स्पष्टत इस सब
द कशो को वनाती रही कि वह इन तर तो को मानन के लिए किसूल
भी तैयार नही है कि मम कुछ देशो को दूसरे से म धक ग्रधिकार ना मामानी
करने की स्वत त्रता दी गई हो। इस प्रकार शान्तिपूर्ण का ों के लिए अरणशक्ति
के विकास और उपयोग मे भारत ने अपनी स्वत त्रता कायम रखी ।
इसका सारा श्रेय इन्दिरा जी को जाता है।

श्रीमती गाधी के शासनकाल मे ही भारत ने उपग्रह युग मे प्रवेश
किया। आयभट्ट भास्कर और भारतीय उपग्रहो की म हेला की कहानी भाग ही
कहानी है किन्तु १९७५ म अमेरिकन "नासा" अन्तरिक्ष एजेंसी के सहयोग
से भारत के गावो मे दूरदर्शन का प्रसारण पहुचाकर एक नई सचार क्रान्ति
का प्रारम्भ किया जो अपने आप मे भारत के लिए बहुत बडी उपलब्धि है।
उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन कार्यक्रम के अ तगत एक वर्ष ी उपरा त के

लिए अमरीकी उपग्रह की सेवाएं प्राप्त कर उसके माध्यम से देश के लगभग 2400 गांवों में जहां यह प्रसारण टेलीविजन या दूरदर्शन के माध्यम से कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं शिक्षण के शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित करने का अभिनव प्रयोग किया गया।

सौभाग्यवश देश के 6 राज्यों में लिए गए प्रयोगात्मक प्रसारण का लाभ राजस्थान के चार सौ गांवों को भी मिला और कोटा, सवाई माधोपुर और जयपुर जिले के सुदूरस्थ गांवों के निवासी इससे लाभान्वित हुए। राजस्थान में दूरदर्शन का यह पहला प्रयोग था और गांववासी महाभारत काल में संजय द्वारा अंधे राजा धृतराष्ट्र को युद्ध का आंखों देखा हाल तथा अन्य पौराणिक चमत्कारों को अपने सामने अपने ही गांव में देखकर चमत्कृत थे। ग्रामीण क्षेत्रों की छोटी छोटी शालाओं में, जहां वैज्ञानिक शिक्षण तो क्या बैठने के लिए टाट पट्टी भी उपलब्ध नहीं थी, दृश्य श्रव्य माध्यम से बालकों को विज्ञान की शिक्षा देने का प्रयोग भी बहुत सफल रहा और उसी से प्रभावित होकर इन्दिरा जी ने दूरदर्शन का देश के गांव गांव में प्रचार व प्रसार करने की योजना को क्रियान्वित करवाया अब 'नासा' उपग्रह की ही तरह इन्सेट। बी (भारतीय उपग्रह) का उपयोग किया जा रहा है। जो न केवल दूरदर्शन व टेलीफोन जैसे संचार माध्यमों में बल्कि भूगर्भीय और पर्यावरणीय अध्ययनों में भी बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। अपनी मृत्यु तक इन्दिरा गांधी ने सम्पूर्ण भारत में दूरदर्शन के इतने केन्द्र स्थापित करवा दिये कि लोग दूरदर्शन को इन्दिरा दर्शन के नाम से पुकारने लगे थे। प्रत्येक दिन 1 की औसत से खुलते हुए यह दूरदर्शन केन्द्र जनता को न केवल मनोरंजन का साधन दे गए वरन् अनौपचारिक शिक्षा का माध्यम भी बन गए। उनके जीवित रहते हुए भी और मृत्युपरान्त भी वास्तव में इन्दिरा ने कल्पना भी नहीं की होगी कि जिन दूरदर्शन केन्द्रों को वह हर प्रांत में व देश के कौने कौने में खोलने का उपक्रम करवा रही है वह उनकी मृत्युपरान्त भी सम्पूर्ण भारत

था उनके दर्शन करवा देगा और जन मानस पर ऐसी छाप छोड़ेगा जिसकी प्रतिक्रिया आने वाले चुनाव मे स्पष्ट दीखेगी। विडम्बना है कि बहुत से भारतवासियो ने केवल इसी दूरदर्शन के माध्यम से ही अपनी दिवंगत नेता के दर्शन किए व उसकी अंतिम यात्रा मे भाग लिया।

अक्सर श्रीमती गांधी पर सोवियत सघ के प्रति अधिक सम्मान का आरोप लगाया जा रहा है किन्तु यह भुला दिया जाता है कि राष्ट्रहित मानकर जिस दिशा से भी सहयोग मिला उसे ही उन्होने अनेक कार्यक्रमो की क्रियान्विति के लिये स्वीकार किया। आराभिश्र उपग्रह सम्बन्धी प्रयोगो के लिये जहा उन्होने अमरीका की विकसित तकनीक ली वहा भारतीय उपग्रह छोडने तथा भारतीयो को अन्तरिक्ष मे भेजने के कार्य मे सोवियत रूस का अपना सहयोगी बनाया। सोवियत रूस के सहयोग से दो भारतीयों राकेश शर्मा व रवीन्द्र मलहोत्रा को अन्तरिक्ष यात्रा के लिये प्रशिक्षित कराया। उसमे राकेश शर्मा को प्रथम भारतीय ही नही प्रथम ऐशियायी यात्री का गौरव दिलाने मे इन्दिरा जी का सहयोग व प्रेरणा की भूमिका मुख्य रही। क्या उपलब्धि हुई यह प्रश्न कई पूछते हैं और पूछेंगे भी किन्तु उत्तर यही है कि प्रारम्भिक उपलब्धियो का जायजा लेने पर तो हिमालय की ऊंचाइयो को छूती नजर नही आती लेकिन भारतीयों के लिये यह कम गौरव की बात नही है कि हममे से एक विश्व की परिधि से परे अन्तरिक्ष की यात्रा का अवसर प्राप्त कर चुका है। हमारे अन्य पडोसी या तीसरी दुनिया के लोग इसकी कल्पना भी नही कर पा रहे थे।

अन्तरिक्ष की ही नही समुद्र की गहराइयो मे भी भारतीय वैज्ञानिको ने खोज की शुरुआत की। श्रीमती गांधी ने दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र मे भी भारतीय अभियान दल भेजने की पहल दिखाई और उन्ही की प्रेरणा से वहा हमारे वैज्ञानिको ने एक स्थाई प्रयोगशाला स्थापित करने की सफलता प्राप्त की।

विज्ञान व नई तकनीक का देश के विकास कार्यों मे उपयोग करने की नीति का प्रारम्भ तो प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू के समय मे ही हो गया थी मार्च 1958 में संसद ने एक प्रस्ताव द्वारा इस नीति पर अपनी मुहर लगा दी थी किन्तु श्रीमती गांधी ने विज्ञान व तकनालजी का एक स्वतंत्र विभाग ही कायम कर दिया और इसका प्रभार भी उन्होंने अपने पास ही रखा। यह सिद्ध करता है कि देश को प्रगति का वैज्ञानिक आधार देने के लिये वह कितनी सचेष्ट थी और इस कार्य को कितना महत्व देती थी। परन्तु श्रीमती गांधी ने भारत की मूल संस्कृति और अहिंसा को आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से धुमिल नहीं होने दिया। उनका सदा ही प्रयास रहा कि विज्ञान का प्रयोग देश की गरीबी और अज्ञान को दूर करने के लिये ही किया जाय। आणविक परीक्षण भी केवल उन्होंने इसी निर्माण कार्यों मे सहायक के रूप मे उपयोग करने के लिये किया। विश्व के अन्य देशों की तरह संहारक साधन के रूप मे नहीं किया।

इस प्रकार इन्दिरा गांधी शांति की साधिका तो थी ही शक्ति व दृढता की भी प्रतिमूर्ति थी।

सफल राजनीतिज्ञ

एक राजनयिक के रूप मे श्रीमती गांधी एक जुझारू औरत था यह कथन है श्री जवाहरलाल कौल का कि वह विवाद से विवाद तक जीती रही, विवाद से विवाद तक उभरती रही। सम्भवत नियति ने उन्हे ऐसे ढांचे मे ढाल दिया था कि व्यक्तिगत क्षणो मे अत्यन्त संवेदनशील होने के बावजूद सार्वजनिक जीवन में वह टकराव से ही जीती रही।

वैसे तो राजनीति उनको विरासत मे ही मिली थी। उनका लालन-पालन ऐसे वातावरण मे हुआ जब सम्पूर्ण परिवार देश के स्वतन्त्रता आंदोलन मे कूद चुका था और किसी के पास इतना समय नहीं था कि उनकी बाल सुलभ जिज्ञासा का शांत करे। किन्तु समय समय पर मिले पिता के पत्रों ने उन्हे कुछ ऐसी दीक्षा दी कि बाद मे उनका रूप सफल

राजनीतिज्ञ के रूप मे ही उभर कर आया। पिता के प्रधानमत्रीत्व काल म वह उनके साथ परिवार के रूप मे ही केवल समर्थन रही अपितु समय-समय पर अपनी अमूल्य राय देकर और कई बार अपने पिता से असहमत होकर उन्होने यह सिद्ध कर दिया कि वह केवल मूकदर्शक न रहकर अपने पिता की सहयोगी भी बन सकती थी। 2 जनवरी 1959 मे जब वह राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी गई तो वास्तव मे वह राजनीतिज्ञ के रूप मे जनमानस के मस्तिष्क पर छाप छोड़ती चली गई। समय २ पर उन्होने यह सिद्ध कर दिया कि वह नेहरू जी कि प्रतिछाया मात्र ही नही है अपितु वह अपना स्वय का स्वत त्र व्यक्तित्व लिए हुए भी है जो न केवल समय-समय पर अपनी अमूल्य राय ही दे सकती है अपितु विद्रोह भी कर सकती है और जिद्दी बाप की जिद्दी बेटी के रूप में कठोर कदम भी उठा सकती है। नेहरू की मृत्यु पश्चात् उन्हे सूचना व प्रसारण मन्त्री बनाया गया किन्तु उनकी हार्दिक इच्छा विदेश मन्त्री बनने की थी। अक्टूबर मे वह पेरिस मे थी जब उन्हे पता चला कि ख्रुश्चेव पता हो गया है। उनके मन मे रूस जाने की इच्छा पैदा हुई। पेरिस से वह लन्दन गई और वहा से मार्शल टीटो के साथ टेलीफोन पर परामर्श किया। मार्शल टीटो ने उन्हे बेलग्रेड बुलाया इससे पहले वह भारत में विदेश मन्त्रालय से सम्पर्क कर चुकी थी। मगर विदेश मन्त्रालय ने उन्हे सरकारी प्रवक्ता के रूप में भेजने में कोई रुचि नही दिखाई। वह टीटो के सहयोग से रूस पहुच गई। नए शासको ने उन्हे आश्वासन दिया कि भारत के साथ वही नीति अपनाई जावेगी जो नेहरू के जमाने से चली आ रही है। इंदिरा गाधी का मास्को जाना विदेश मन्त्रालय को अच्छा नही लगा। स्वय प्रधानमत्री शास्त्री जी ने भी इस यात्रा को कोई महत्व नही दिया। मगर श्रीमती गाधी की इस व्यक्तिगत पहल से उनके चरित्र का वह पहलू उभर कर आया जिसके कारण बाद के वर्षों मे उनके प्रतिद्वन्द्वियों को बार-बार मात खानी पडी। उनका राजनीतिज्ञ के रूप में भारतीय जन

मानस पर जो चित्र उभर कर आया वह एक ऐसे राजनीतिज्ञ का था जो अपने व्यक्तित्व व अपनी इच्छा के सामने किसी को टिकने न दे सके। उनका यह रूप अंतिम दिन तक रहा कि उनका अद्भुत व्यक्तित्व सभी के ऊपर छाया रहा। उनका यह रूप हिटलर व मुसोलिनी की प्रतिछाया सा अनुभव होता रहा। उनका कांग्रेस पार्टी पर व सरकार पर आधिपत्य व वर्चस्व चाहे वह केन्द्रीय सरकार हो या राज्य की सरकारें, उनकी पकड़ से अलग न हो सका। यहां तक कि जब जो भी उनके दल का प्रतिपक्षी व्यक्ति उभरने का प्रयत्न करता तो उनके अद्भुत व्यक्तित्व के सामने टिक नही पाता था। उनकी ही पार्टी के महत्वाकांक्षी व्यक्ति जब उभरने का प्रयत्न करते तो मैडम हाइकमाण्ड (इन नामों से ही वह अन्तिम वर्षों में जानी जाने लगी थी) की आज्ञा का उल्लंघन करने का जीवट नहीं जुटा पाते थे। परिणामस्वरूप अपने प्रधानमंत्री काल के 16 वर्षों में वह एक कूटनीतिज्ञ व सफल राजनीतिज्ञ के रूप में ही जनमानस के हृदयपटल पर छाई रहीं।

शास्त्रीजी की मृत्यु पश्चात इंदिरा गांधी व मोरारजी देसाई से संघर्ष भारत के इतिहास की अविस्मरणीय घटना है। मोरारजी देसाई के लिए उनके ही कथनानुसार (यह सिद्धांत का सवाल था। वह किसी भी तरह पीछे हटने के तैयार नहीं थे। संसद के केन्द्रीय हॉल में बाहर पत्रकारों और वरिष्ठ कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का भारी हुजूम कुछ ऐसी प्रतीक्षा में खड़ा था जैसे प्रसवकक्ष के बाहर नाते रिश्तेदारों का जमघट। अंदर कांग्रेस संसदीय दल के नेता का चुनाव हो रहा था। ज्यों ही संसदीय मामलों के मंत्री सत्यनारायण सिंहा बाहर आये तो किसी ने पूछा क्या हुआ लड़का या लड़की? मुस्कराते हुए सिंहा ने उत्तर दिया लड़की और इसके साथ ही नारे गूंज उठे 'इंदिरा गांधी जिन्दाबाद' यह नारा आने वाले दिनों में देश के हर क्षेत्र में इतना दोहराया गया कि शायद 'जय हिंद'

को छोडकर स्वतन्त्र भारत मे कोई और नारा इतनी बार नही दोहराया गया । एक प्रश्न के उत्तर मे एक बार इन्दिरा गाधी ने कहा था, "मैं अपनी मा की बेटी भी हू और पिता की भी । शायद मुझ मे दादा के भी कुछ गुण आ गये है" मगर वह सबमे भिन्न भी थी । नेहरू परम्परा से उन्हे लगाव अवश्य था किन्तु वह परम्परा कुछ विशेष नीतियो तक ही सीमित थी । नेहरू और इन्दिरा दोनो की शक्तियो मे कुछ मौलिक अन्तर भी था । बचपन में वह अन्तरमुखी थी । नेहरू का व्यक्तित्व पारदर्शी था मगर इन्दिरा की चिन्तन प्रक्रिया केवल तैयार माल के रूप मे बाहर आती थी । वह सस्वर सोचने की आदी नही थी । इन्दिरा गाधी उस प्राणी की तरह थी जो तभी आक्रमण करता है जब जबाब का रास्ता नही मिलता । मगर समर्पण करने के बदले आक्रमण करता है । उनके बचपन की मित्र पुपुल जयकर कहती हैं "इन्दिरा गाधी सकट के समय अपनी छिपी हुई शक्तियो को आहूत करने की कला जानती थी" यो शायद उनकी इसी विशेषता की ओर उनका सकेत था । जब जब इन्दिरा जी विपरीत परिस्थितियो में घिर गई उनके भीतर की शक्ति आश्चर्यजनक तेजी के साथ सतह पर आ गई और उनका वह रूप व तेज ही ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर गया जो आने वाली पीढियो के लिये न देखा न सुना जैसा अनुभव होगा ।

नेहरू परम्परा को इन्दिरा जी ने अपनी विदेश नीति मे जितना सजा कर रखा उतना घरेलू मामलो में नही । वैज्ञानिक तकनीक उन्हे विरासत मे मिली थी जिस पर प्रयोग उन्होने विभिन्न क्षेत्रो मे अनुसधान और आधुनिकीकरण के लिया किया। मगर राष्ट्रीय सहमति और साम्प्रदायिक सद्भाव के मामलो मे उन्होने अपने पिता से कही अधिक समझौते किये । आर्थिक मामलो मे भी समाजवादी अर्थशास्त्र की बातें करते हुए भी श्रीमती इन्दिरा गाधी को बहुत हद तक यथा स्थिरवाद और अल्पकालिक कार्यवाहियो का ही सहारा लेना पडा । मगर इन कार्यवाहियो को भी उन्होने राज-नीतिक के रूप में ऐसे अनुकूल समय पर पेश किया कि तात्कालिक रूप से वे सफल रही ।

